



पश्चिम मध्य रेलवे

मुख्यालय, जबलपुर

राजभाषा संहिता

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति
स्वर्ण जयंती बैठक



राजभाषा-जनभाषा-राष्ट्रभाषा

राजभाषा स्मारिका - 2020

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर की बैठकों के नियमित आयोजन और पश्चिम मध्य रेलवे पर संघ की राजभाषा नीति के कारगर एवं सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग अपने सभी महाप्रबंधकों के प्रति आभार व्यक्त करता है।



शैलेन्द्र कुमार सिंह
महाप्रबंधक



पश्चिम मध्य रेलवे

अदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि पश्चिम मध्य रेलवे, मुख्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर की स्वर्ण जयंती बैठक का आयोजन किया जा रहा है और इस अवसर पर मुख्यालय की गृह पत्रिका 'राजभाषा सरिता' का 36वां अंक स्मारिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विभागीय पत्रिकाएं आपसी संवाद का बेहतर माध्यम होती हैं। मुझे खुशी है कि पश्चिम मध्य रेलवे मुख्यालय के विभागों, मंडलों तथा कारखानों द्वारा विभागीय पत्रिकाओं का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है, जिनके माध्यम से हमें इस रेलवे पर किये जा रहे सराहनीय एवं महत्वपूर्ण गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है।

मुझे विश्वास है कि यह स्मारिका राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की दृष्टि से ज्ञानवर्धक और उपयोगी सिद्ध होगी और इसके प्रकाशन से हमारे कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार में उत्तरोत्तर प्रगति होगी।

मैं, पश्चिम मध्य रेलवे पर राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयासों की सराहना करता हूँ और अपने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वर्ण जयंती बैठक के लिए बधाई देता हूँ तथा इस स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(शैलेन्द्र कुमार सिंह)
महाप्रबंधक





शोभन चौधुरी
अपर महाप्रबंधक



पश्चिम मध्य रेलवे

अंदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर की स्वर्ण जयंती बैठक के अवसर पर मुख्यालय, राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका 'राजभाषा सरिता' के 36वें अंक का प्रकाशन स्मारिका के रूप में किया जा रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि इस स्मारिका के प्रकाशन से हम भारत सरकार की राजभाषा नीति, प्रोत्साहन योजनाओं, राजभाषा नियम एवं अधिनियम की बारीकियों से अवगत होंगे। साथ ही हमें पमरे पर राजभाषा विभाग द्वारा किये जा रहे सराहनीय कार्यों एवं महत्वपूर्ण गतिविधियों की जानकारी भी प्राप्त होगी।

मुझे विश्वास है कि स्मारिका के प्रकाशन से हमारे कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग-प्रसार हेतु अनुकूल वातावरण निर्मित होगा और हमारे रेल अधिकारी एवं कर्मचारी अपना अधिकाधिक दैनंदिन सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करने के लिए प्रेरित होंगे।

मैं, इस सराहनीय प्रयास के लिए राजभाषा विभाग को बधाई देता हूँ और स्वर्ण जयंती बैठक के सफल आयोजन तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(शोभन चौधुरी)
अपर महाप्रबंधक





कार्तिक चौहान
मुख्य राजभाषा अधिकारी



पश्चिम मध्य रेलवे

अदेश

आपको यह अवगत कराते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि पश्चिम मध्य रेलवे, राजभाषा विभाग द्वारा क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर की स्वर्ण जयंती बैठक का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर मुख्यालय की गृह पत्रिका राजभाषा सरिता के 36 वें अंक का प्रकाशन स्मारिका के रूप में किया जा रहा है।

01 अप्रैल 2003 को पश्चिम मध्य रेलवे के गठन के साथ ही इस रेल पर रेल संचालन संबंधी महत्वपूर्ण नवीन गतिविधियों के साथ-साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का कार्य भी शुरू हुआ। क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर की 19 सितंबर 2003 को आयोजित पहली बैठक के साथ शुरू हुआ यह सफर आज 50वीं मंजिल तक पहुंच चुका है। यह हम सभी के लिए गौरव का विषय है।

राजभाषा सरिता के इस अंक को स्मारिका के रूप में प्रकाशित करने का हमारा मुख्य उद्देश्य यह है कि हमारे सभी अधिकारी और कर्मचारी भारत सरकार की राजभाषा नीति के विभिन्न पहलुओं, प्रोत्साहन योजनाओं, अधिनियम एवं नियमों से अवगत होंगे। साथ ही उन्हें इस रेलवे पर राजभाषा विभाग द्वारा किये जा रहे सराहनीय कार्यों, महत्वपूर्ण गतिविधियों तथा उपलब्धियों की जानकारी भी प्राप्त होगी और वे अपना दैनंदिन सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

राजभाषा विभाग इस सराहनीय प्रयास के लिए बधाई का पात्र है। मैं, पश्चिम मध्य रेलवे, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित की जा रही स्वर्ण जयंती बैठक के सफल आयोजन तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।



कार्तिक चौहान

(कार्तिक चौहान)

मुख्य राजभाषा अधिकारी



संपादक की कलम से

01 अप्रैल 2003 को पश्चिम मध्य रेलवे के गठन के साथ ही इस रेल पर रेल संचालन संबंधी महत्वपूर्ण गतिविधियों के साथ-साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का कार्य भी शुरू हुआ। वस्तुतः राजभाषा के कार्यान्वयन में प्रगति सामूहिक प्रयास से ही संभव है। किसी एक व्यक्ति अथवा एक विभाग द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन का काम शत-प्रतिशत करने से भी अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त करना संभव नहीं है।

यह एक स्वीकृत सत्य है कि शक्ति का संचार हमेशा ऊपर से नीचे को होता है। किसी भी संस्था के सर्वोच्च प्रबंधन की इच्छा शक्ति, दिशा-निर्देश तथा संकल्प ही विभिन्न स्तरों पर कार्यरत अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा उत्पन्न करता है।

पश्चिम मध्य रेल का सौभाग्य रहा है कि इसके गठन के साथ ही इसे कुशल नेतृत्व प्राप्त हुआ है। फलस्वरूप इस रेलवे ने न केवल रेल संचालन के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किये हैं बल्कि राजभाषा प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में भी अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी अपने संवैधानिक दायित्वों के प्रति सचेष्ट हैं। इस रेल पर मुख्यालय, मंडलों तथा कारखानों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार हेतु अनुकूल वातावरण बना हुआ है और हम निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हैं। इसका एक सुपरिणाम यह भी हुआ है कि पश्चिम मध्य रेलवे के गठन के बाद संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा जून 2005 में मंडल रेल प्रबंधक, भोपाल तथा सितंबर 2006 में महाप्रबंधक कार्यालय, जबलपुर तथा कोटा मंडल के भरतपुर स्टेशन, संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य, उप समिति द्वारा सितंबर 2012 में महाप्रबंधक कार्यालय, जबलपुर और दूसरी उप समिति द्वारा फरवरी 2013 में महाप्रबंधक कार्यालय, जबलपुर तथा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, भोपाल का निरीक्षण किया गया। इन निरीक्षणों के दौरान माननीय सदस्यों द्वारा पश्चिम मध्य रेल पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना की गई।

यह उल्लेखनीय है कि हम रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) स्तर पर लगातार सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं। इस रेलवे को वित्तीय वर्ष 2011-12 से रेल मंत्री राजभाषा शील्ड लगातार प्राप्त हो रही है। इसके अलावा महाप्रबंधक कार्यालय को वर्ष 2012 एवं 2019 में रेल मंत्री राजभाषा ट्राफी तथा कोटा मंडल को वर्ष 2010 में 'आचार्य महावीर

प्रसाद द्विवेदी' चल शील्ड प्राप्त करने का गौरव हासिल हुआ है। साथ ही हमारे अधिकारी एवं कर्मचारीगण रेलवे बोर्ड की विभिन्न पुरस्कार योजनाओं तथा प्रतियोगिताओं में अब्बल स्थान प्राप्त कर हमें गौरवान्वित कर रहे हैं। पश्चिम मध्य रेलवे के गठन के उपरान्त इस रेलवे पर किये जा रहे उल्लेखनीय कार्यों एवं उपलब्धियों तथा इस रेलवे को अब तक प्राप्त पुरस्कारों का विवरण आप सभी के अवलोकन हेतु इस स्मारिका में विस्तारपूर्वक दिया गया है।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर की स्वर्ण जयंती बैठक के अवसर पर प्रकाशित इस स्मारिका के माध्यम से हम इस रेलवे पर भारत सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु कुशल नेतृत्व प्रदान करने के लिए अपने वर्तमान तथा पूर्ववर्ती सभी महाप्रबंधकों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। साथ ही अपने वर्तमान और पूर्व मुख्य राजभाषा अधिकारियों को उनके कुशल मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद देते हैं। इसके अलावा मैं इस रेलवे के सभी हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों और राजभाषा विभाग के अपने सहयोगियों को भी धन्यवाद देता हूँ जिनके अथक परिश्रम और सामूहिक प्रयासों से हमने कई अभूतपूर्व सफलताएं अर्जित की हैं।

अंत में कहना चाहूंगा कि हमारे लिए यह अत्यंत गौरव का विषय है कि आज पश्चिम मध्य रेलवे पर एक सुदृढ़ ढांचे के अंतर्गत राजभाषा का कार्यान्वयन जारी है और आप सभी के सामूहिक प्रयासों से हम लगातार प्रगति की ओर अग्रसर हैं। इस हेतु आप सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

हम राजभाषा सरिता के लेखकों, संकलनकर्ताओं तथा सहयोगियों को धन्यवाद देते हैं और सुधी पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे अपने रचनात्मक सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं। स्मारिका के रूप में प्रकाशित राजभाषा सरिता के इस अंक में हमने पश्चिम मध्य रेल, राजभाषा विभाग की अप्रैल 2003 से मार्च 2020 तक की विविध गतिविधियों एवं उपलब्धियों को छायाचित्रों सहित प्रकाशित कर इस अंक को सूचनापरक बनाने का प्रयास किया है। आशा है हमारा यह प्रयास आपको यह पसंद आएगा। हम यह कामना करते हैं कि भारत सहित पूरा विश्व कोरोना महामारी से शीघ्र मुक्त हो।

जय हिंद! जय-जय हिंदी!

पी. एस. बगड़वाल
वरि. राजभाषा अधिकारी

राजभाषा सरिता

अंक - 36 एवं 37 (संयुक्तांक)

वर्ष - 2020

अप्रैल - सितंबर

अनुक्रमणिका

✽
संरक्षक
श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह
महाप्रबंधक

✽
श्री शोभन चौधरी
अपर महाप्रबंधक

✽
मार्गदर्शक
श्री कार्तिक चौहान
मुख्य राजभाषा अधिकारी

✽
परामर्श
श्री सुवीर श्रीवास्तव
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

✽
संपादक
पी.एस. बगड़वाल
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

✽
उप संपादक
राकेश कुमार मालवीय
वरिष्ठ अनुवादक

✽
सहयोग
राजभाषा विभाग

✽
छायांकन
श्री राजेन्द्र पैगवार

✽
पत्राचार का पता
संपादक, राजभाषा सरिता
पश्चिम मध्य रेलवे

कार्यालय, इंदिरा मार्केट, जबलपुर (म.प्र.)
फोन : 0761-2627077, 54714 (रेलवे)

- सीमित संख्या में निःशुल्क वितरण के लिए
- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
1.	संघ की राजभाषा नीति और हमारा दायित्व	02
2.	पश्चिम मध्य रेल पर राजभाषा हिंदी का प्रगामी प्रयोग	04
3.	संसदीय राजभाषा समिति द्वारा पमरे के कार्यालयों का निरीक्षण	07
4.	रेल मंत्री राजभाषा पदक विजेता हमारे अधिकारी	09
5.	हमारे मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी	10
6.	रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत पुरस्कार योजना के अंतर्गत पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारी	12
7.	रेलवे बोर्ड स्तर पर प्राप्त शील्ड एवं ट्राफी	14
8.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	16
9.	हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन	18
10.	रेल हिंदी नाट्योत्सव	19
11.	भोपाल मंडल पर राजभाषा प्रगति	20
12.	राजभाषा एवं जबलपुर मंडल	23
13.	कोटा मंडल पर राजभाषा के बढ़ते चरण	25
14.	कोटा कारखाना में प्रगति पथ पर अग्रसर राजभाषा	28
15.	राजभाषा हिंदी के समग्र विकास में समर्पित सवारी डिब्बा पुनर्निर्माण कारखाना, भोपाल	31
16.	छायाचित्र वीथिका	33

रेल की भाषा , मेल की भाषा। देश की भाषा, हिंदी भाषा॥

संघ की राजभाषा नीति और हमारा दायित्व

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन काल से ही हिंदी को संपर्क एवं राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था। यह इसलिए नहीं कि हिंदी एकमात्र और सर्वप्रमुख भारतीय भाषा थी, बल्कि उस समय विदेशी शासन व्यवस्था सहित समस्त विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना हमारा प्रमुख लक्ष्य था और विदेशी भाषा अंग्रेजी के स्थान पर किसी सर्वसम्मत

भारतीय भाषा के प्रयोग की आवश्यकता महसूस की गई थी। संपूर्ण भारतवर्ष में हिंदी के बोलने एवं समझने वालों की संख्या तथा इसके विस्तार को ध्यान में रखकर हिंदी को उस समय राष्ट्रभाषा कहा गया। इसके अतिरिक्त हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने की पृष्ठभूमि में सबसे महत्वपूर्ण कारण यह रहा कि हिंदी पूरे भारत को जोड़ने वाली भाषा रही है। भारतीय मनीषियों ने जिस एकीकृत भारत का स्वप्न संजोया था, उसे मूर्तरूप देने के लिए सक्रिय प्रयास भी किए।

हमारी राजनीतिक एकता भले पिछली शताब्दी की देन है, परन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से भारत सदियों से एक राष्ट्र रहा है।

पर्यटन, तीर्थाटन, व्यापार-वाणिज्य सहित अन्य उद्देश्यों से भारत के एक प्रांत के निवासी, यहाँ तक कि अशिक्षित और अल्प शिक्षित लोग भी, दूसरे प्रांतों की यात्रा

करते रहे हैं। उस समय टूटी-फूटी हिंदी के माध्यम से ही वे अपने को पूरे भारत में अभिव्यक्त करते रहे हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय एकता के महान लक्ष्य की पूर्ति में हिंदी हमेशा से ही साधिका रही है। हिंदी के इसी विशेष गुण के कारण भी लोगों ने इसे राष्ट्रभाषा कहा और हृदय से अपनाया, अन्यथा भारत की समस्त भाषाएं राष्ट्रीय भाषा अथवा राष्ट्र की भाषाएं हैं।



जिस प्रकार राष्ट्र-ध्वज में देश का मान छिपा होता है। राष्ट्रीय संविधान देश की शान का प्रतीक होता है। उसी प्रकार राष्ट्रभाषा देश की आन और वाणी का अभिमान होती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान के सुधी प्रणेताओं ने भारत सरकार के सरकारी कामकाज की भाषा के विषय में व्यापक विचार-विमर्श किया। अतः 14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा ने विस्तृत विचार-विमर्श के बाद हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की।

जिस प्रकार राष्ट्र-ध्वज में देश का मान छिपा होता है। संविधान देश की शान का प्रतीक

होता है। उसी प्रकार राष्ट्रभाषा देश की आन और वाणी का अभिमान होती है। अतः प्रथम गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान के लागू हो जाने के बाद से हमारा यह संवैधानिक कर्तव्य तथा नैतिक जिम्मेदारी है कि अपनी राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्र धर्म का पालन करते हुए हम पवित्र ग्रंथ भारतीय संविधान, राष्ट्रीय प्रतीक तिरंगा ध्वज, राष्ट्रगान जन गण

राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है - अनंत गोपाल शेवडे

मन एवं राष्ट्रगीत वंदेमातरम् की तरह राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान व्यक्त करें तथा इसके प्रयोग के लिए किये जा रहे उपायों को लागू करने में अपना सहयोग दें। हिंदी राष्ट्रीयता व देशप्रेम से जुड़ा मसला है। अतः हिंदी की गरिमा को बनाए रखने की जिम्मेदारी हम सबकी है।

यह बड़े हर्ष और गौरव का विषय है कि 01 अप्रैल 2003 में पश्चिम मध्य रेलवे के गठन के साथ ही इस रेल पर रेल संचालन संबंधी महत्वपूर्ण गतिविधियों के साथ-साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का कार्य भी शुरू हुआ। पश्चिम मध्य रेल का सौभाग्य रहा है कि इसके गठन के साथ ही इसे कुशल नेतृत्व प्राप्त हुआ है, फलस्वरूप अल्प समय में ही इसने रेल संचालन के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किये हैं।

पश्चिम मध्य रेल, भारतीय रेल का हृदय कहलाता है। मुख्यालय सहित इसके क्षेत्राधिकार में पड़ने वाले तीनों मंडल तथा दोनों कारखाने राजभाषा प्रयोग-प्रसार के लिए 'क' क्षेत्र में आते हैं। यद्यपि हमारे मंडल तथा कारखानों में राजभाषा विभाग पहले से ही स्थापित थे। लेकिन 2003 में मुख्यालय में राजभाषा विभाग ने अपने पैर नए-नए ही जमाए थे। इसके बावजूद हमें कम समय में ही राजभाषा प्रयोग-प्रसार में कई

उपलब्धियां प्राप्त करने का गौरव हासिल है। इस रेल पर पदस्थ महाप्रबंधकों के कुशल नेतृत्व और मुख्य राजभाषा अधिकारियों के मार्गदर्शन में अनेक उपलब्धियां हासिल करने का गौरव प्राप्त हुआ है जिनका संक्षिप्त विवरण इस स्मारिका में आगे दिया गया है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन है किन्तु राजभाषा संबंधी अनुदेशों का पालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना अपेक्षित है जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का पालन किया जाता है। हालांकि हिंदी अपनी भाषिक विशेषताओं, सरसता, शाब्दिक उदारता, और साहित्यिक समृद्धि के कारण भारत की भौगोलिक सीमाओं के भीतर और बाहर निरंतर लोकप्रिय हो रही है। तथापि पश्चिम मध्य रेलवे का राजभाषा विभाग आप सभी से विनयपूर्वक अपील करता है कि अपना अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में निष्पादित कर अपने संवैधानिक और नैतिक दायित्वों का निर्वहन करें और पश्चिम मध्य रेल को राजभाषा प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में शिखर पर आरूढ़ करने में हमें सहयोग प्रदान करें।

पी. एस. बगड़वाल
वरि. राजभाषा अधिकारी

संविधान की अष्टम अनुसूची में उल्लिखित भारतीय भाषाएँ (अनुच्छेद 344 (1) 351)

- | | | | |
|-------------|------------|------------|-------------|
| 1. असमिया | 2. उड़िया | 3. उर्दू | 4. कन्नड |
| 5. कश्मीरी | 6. गुजराती | 7. तमिल | 8. तेलुगू |
| 9. पंजाबी | 10. बंगला | 11. मराठी | 12. मलयालम |
| 13. संस्कृत | 14. सिंधी | 15. हिंदी | 16. मणिपुरी |
| 17. नेपाली | 18. कोंकणी | 19. मैथिली | 20. संथाली |
| 21. बोडो | 22. डोंगरी | | |

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता व उन्नति के लिए आवश्यक है - महात्मा गाँधी

पश्चिम मध्य रेल पर राजभाषा हिंदी का प्रगामी प्रयोग

राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा हिंदी की प्रगति और विकास का आंकलन जहां देशवासियों के हिंदी समझने, बोलने, पढ़ने-लिखने के आधार पर किया जाता है वहीं सरकारी कार्यालयों में इसका अनुपालन मुख्यतः तीन स्तरों पर किया जाता है :-

(1) अनुवाद (2) कार्यान्वयन (3) प्रशिक्षण।

ये तीनों अंग क्रमशः शरीर के मस्तिष्क, हृदय और उदर की तरह हैं जिनका संबंध राष्ट्रीय अस्मिता, प्रेम और भावनात्मक संवेदनाओं से जुड़ा हुआ है।

01. अनुवाद:-

राजभाषा प्रयोग-प्रसार में अनुवाद का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अनुवाद एक सतत् चलने वाला कार्य है क्योंकि भारत सरकार की द्विभाषिक नीति लागू है। जिसके तहत नियमावली व धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में जारी करना अनिवार्य होता है। अनुवाद कार्य में दोनों भाषाओं के भावों की समझ, हिंदी-अंग्रेजी व्याकरण व शब्दकोश का ज्ञान तथा उसे प्रसंगानुसार लक्ष्य भाषा में ढालने के लिए विवेक का प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे मस्तिष्क की संज्ञा दी गई है। पमरे के गठन के बाद राजभाषा विभाग द्वारा तीन नियमावलियों यथा पमरे की सामान्य एवं सहायक नियमावली, दुर्घटना नियमावली तथा चल लेखा परीक्षा नियमावली के अनुवाद किये गए। इसके अलावा स्टेशन संचालन नियम, इनके शुद्धि पत्र तथा संशोधन, संरक्षा परिपत्र एवं बुलेटिन, सतर्कता बुलेटिन, सामान्य आदेश, संविदा एवं करार तथा विभिन्न परिपत्र आदि दस्तावेजों के अनुवाद कार्य प्रतिदिन नियमित रूप से किया जाता है।

02. कार्यान्वयन:-

राजभाषा नीति का कार्यान्वयन व अनुपालन प्रभावी रूप से हो, इसका एक मात्र उपाय है कि व्यक्तियों के हृदय में राजभाषा के प्रति लगाव, निष्ठा और प्रेम का भाव जागृत किया जाए ताकि स्वभाविक रूप से निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किये जा सकें। राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य राजभाषा विभाग के प्रमुख दायित्वों में से एक

है। इसका मुख्य उद्देश्य संघ की राजभाषा नीति के अनुरूप सरकारी कामकाज हिंदी में कराना तथा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार विभिन्न मदों के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना है। जोनल रेलवे के गठन के समय राजभाषा विभाग में कर्मचारियों की सीमित संख्या होने तथा उनसे राजभाषा के साथ-साथ अन्य विभागों के कार्य करवाए जाने के कारण राजभाषा नीति का कार्यान्वयन व अनुपालन प्रारंभिक वर्षों में क्षेत्रीय राजभाषा समिति की बैठक कराने आदि तक सीमित रहा। मुख्यालय में राजभाषा अधिकारियों की पदस्थापना के बाद कार्यान्वयन में तेजी आई और वर्ष दर वर्ष उत्तरोत्तर प्रगति एवं उपलब्धियों के नये आयाम स्थापित हुए।

3. प्रशिक्षण:-

कहावत है कि उदर ठीक तो स्वास्थ्य ठीक, वैसे ही हिंदी में कर्मी प्रशिक्षित तो हिंदी प्रगति सुनिश्चित। राष्ट्रपति जी के 27 अप्रैल 1960 के आदेश के अनुसार कुछ श्रेणी के कर्मचारियों को छोड़कर केन्द्र सरकार के सभी कर्मचारियों के लिए हिंदी सीखना अनिवार्य है। इसी प्रकार संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी है। तदनुसार केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी में काम हो, यह आवश्यक है। यह तभी संभव है जब सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में प्रशिक्षित हों या प्रवीण हों। अतः हिंदी न जानने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गई है। प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी गृहमंत्रालय, राजभाषा विभाग को सौंपी गई है जो हिंदी शिक्षण योजना के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ प्रशिक्षण तथा हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण देने का कार्य करता है। प्रशिक्षण में सफल कर्मियों को आर्थिक प्रोत्साहन भी दिया जाता है जो कर्मी नियमित कक्षा में भाग नहीं ले सकते वे पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा परीक्षा दे सकते हैं। पश्चिम मध्य रेल पर प्रशिक्षण की स्थिति निम्नानुसार है:-

(क) प्रबोध / प्रवीण / प्राज्ञ प्रशिक्षण :-

पश्चिम मध्य रेल पर प्रबोध / प्रवीण / प्राज्ञ प्रशिक्षण के लिए

हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जिसे बिना भेदभाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है - मदन मोहन मालवीय

कोई अधिकारी/ कर्मचारी शेष नहीं है। अर्थात् सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में प्रशिक्षित है अथवा उन्हें हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है।

(ख) हिंदी कुंजीयन/ हिंदी टंकण/ आशुलिपि का प्रशिक्षण :-

पश्चिम मध्य रेल पर कुल 88 टंकक कार्यरत हैं जो सभी प्रशिक्षित है इसी प्रकार कुल 165 आशुलिपिक कार्यरत हैं जिसमें से 89 आशुलिपिक हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षित हैं। पश्चिम मध्य रेल के गठन के समय से अब तक कुल 2,504 कर्मचारियों को हिंदी कुंजीयन का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

हमारा यह प्रयास रहता है कि सभी के मन में हिंदी के प्रति सकारात्मक भाव जागृत हो, हर कर्म के मन में हिंदी काम करने पर गर्व महसूस हो, सबके मन में हिंदी के प्रति आत्मीयता पैदा हो तथा हिंदी प्रगति का भाव जागृत हो, इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निम्नलिखित आयोजन/कार्यक्रम किए गए :-

राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें आयोजित करना :-

संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने और हिंदी प्रयोग को बढ़ा देने के उद्देश्य से पश्चिम मध्य रेल पर क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन सहित कुल 33 (तैंतीस) मंडल/ कारखाना/ स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समितियां गठित हैं। इन समितियों की बैठकों में हिंदी प्रगति की समीक्षा की जाती है तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की जाती है और तदनुसार राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित किया जाता है। इन समितियों की तिमाही बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जा रही है जिससे राजभाषा प्रगति में तेजी आयी है।

हिंदी दिवस/ राजभाषा सप्ताह/ राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन :-

राजभाषा प्रयोग-प्रसार बढ़ाने की कड़ी में हिंदी दिवस/राजभाषा सप्ताह/ राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन प्रमुख कारक है। तदनुसार मुख्यालय/ मंडलों तथा कारखानों पर प्रतिवर्ष सितंबर माह में राजभाषा सप्ताह/राजभाषा पखवाड़ा मनाया जाता है। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इन

आयोजनों से राजभाषा प्रयोग-प्रसार हेतु अनुकूल वातावरण निर्मित होता है। इसके अलावा पमरे पर 14 सितंबर हिंदी दिवस के अवसर पर अधिकारी तथा कर्मचारियों को हिंदी में कार्य हेतु प्रेरित करने की दृष्टि से प्रतिवर्ष महाप्रबंधक महोदय का हिंदी दिवस संदेश प्रकाशित किया जाता है। हिंदी संदेश के माध्यम से सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों से अधिकाधिक काम हिंदी करने की अपील की जाती है।

हिंदी दिवस/ राजभाषा सप्ताह/ राजभाषा पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर वर्षभर हिंदी में सराहनीय कार्य करने वाले, विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मुख्यालय/मंडल एवं कारखाना स्तर पर पुरस्कृत किया जाता है। हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजभाषा चल शील्ड, ट्रॉफी तथा अंतर कारखाना चल शील्ड प्रदान की जाती है। साथ ही प्रतिवर्ष रेल सप्ताह समारोह के अवसर पर किसी एक मंडल को महाप्रबंधक की राजभाषा दक्षता शील्ड प्रदान की जाती है।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन :-

उक्त प्रशिक्षण के अलावा राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय हिंदी कार्यशालाएं चलायी जाती हैं जिनसे हिंदी प्रयोग-प्रसार का एक प्रेरक माहौल बनता है और कर्मचारियों में हिंदी में काम करने के प्रति जागरूकता बढ़ती है। हिंदी कार्यशालाओं में राजभाषा नीति एवं प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी देने के साथ-साथ मसौदा तथा पत्र लेखन का अभ्यास कराया जाता है। इससे कर्मचारियों में हिंदी पत्र लेखन के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है व राजभाषा नियमों के अनुपालन की ओर अधिक सजगता बढ़ती है। इस रेलवे के गठन के उपरांत अब तक कुल 272 हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन कर 45,279 कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

प्रोत्साहन योजनाओं का कार्यान्वयन :-

संघ की राजभाषा नीति मूलतः प्रोत्साहन पर आधारित नीति है। पमरे पर गृह मंत्रालय एवं रेलवे बोर्ड की सभी प्रोत्साहन योजनाएं लागू हैं जिनमें अधिकारी/ कर्मचारी उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं और लगातार पुरस्कार प्राप्त कर पश्चिम मध्य रेलवे का गौरव

हिंदी ठमाने राष्ट्र की अभिव्यक्ति का अखिलतम स्रोत है - सुमित्रानंदन पंत

बढ़ा रहे हैं।

हिंदी पुस्तकालयों का संचालन :-

राजभाषा प्रयोग-प्रसार बढ़ाने की दिशा में हिंदी पुस्तकालयों का भी विशेष योगदान है। वर्तमान में मुख्यालय सहित मंडलों, कारखानों तथा स्टेशनों व डिपो में कुल 39 हिंदी पुस्तकालय संचालित हैं। जिनमें 82,331 पुस्तकें उपलब्ध हैं। मुख्यालय में पाठकों की संख्या 200 के आसपास है।

निरीक्षण :-

राजभाषा संबंधी आदेशों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए निरीक्षण करने वाले अधिकारियों का बड़ा योगदान है। राजभाषा विभाग के अधिकारी समय-समय पर राजभाषा प्रगति का निरीक्षण करते हैं तथा अन्य अधिकारी भी अपने विभागीय निरीक्षण के दौरान राजभाषा प्रगति का भी जायजा लेते हैं तथा पायी गई कमियों को दूर करने हेतु प्रभावी कदम उठाते हैं।

विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन :-

प्रतियोगिताओं के आयोजन से कर्मचारियों में उत्साह एवं उल्लास बना रहता है। पश्चिम मध्य रेल पर अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिताओं के अलावा राजभाषा सप्ताह/ पखवाड़ा के अवसर पर विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। रेलवे बोर्ड द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पमरे के कर्मचारी अखिल रेल स्तर पर पश्चिम मध्य रेलवे का नाम रोशन कर रहे हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन :-

इस प्रकार के कार्यक्रम कर्मचारियों के मन में आकर्षण, जागरूकता और संकल्प शक्ति उत्पन्न करने के लिए आयोजित किये जाते हैं। पमरे सांस्कृतिक अकादमी के कलाकारों द्वारा अध्यक्ष/ पमरे सांस्कृतिक अकादमी के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में राष्ट्रीय पर्व व पमरे स्थापना दिवस, रेल सप्ताह, हिंदी सप्ताह आदि अवसरों पर सराहनीय प्रदर्शन किया जाता है। सांस्कृतिक अकादमी के नाट्य कलाकार रेलवे बोर्ड स्तर पर आयोजित हिंदी नाट्योत्सव प्रतियोगिता में पश्चिम मध्य रेल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

राजभाषा नीति संबंधी पम्पलेट, डायरी, पोस्टर आदि का प्रकाशन :-

राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु अनुकूल वातावरण बनाने में

राजभाषा नीति संबंधी पम्पलेट, डायरी, पोस्टर आदि का बहुत बड़ा योगदान होता है। इनसे कर्मचारी हिंदी में काम करने के प्रति आकर्षित होते हैं। मुख्यालय, भोपाल, कोटा एवं जबलपुर मंडल तथा भोपाल एवं कोटा कारखानों द्वारा इनका नियमित रूप से प्रकाशन किया जाता है।

अभिप्रेरणा:- प्रेरणा शक्ति अन्य शक्तियों से अधिक शक्तिशाली होती है। मोटीवेशन के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कठिनाइयों एवं समस्याओं का पता चलता है तदनुसार उनकी समस्याओं का समाधान कर हिंदी में काम करने के लिए उन्हें प्रेरित व प्रोत्साहित किया जाता है। फलस्वरूप वे हिंदी में कार्य करने के प्रति प्रोत्साहित होते हैं। पमरे मुख्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा दैनिक मोटीवेशन कार्यक्रम के दौरान कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए मोटीवेट किया जाता है।

पत्रिका प्रकाशन- राजभाषा पत्रिकाएं हिंदी प्रयोग-प्रसार का एक सशक्त माध्यम होती हैं जिनके माध्यम से राजभाषा नीतियों एवं योजनाओं की जानकारी पाठकों तक सुगमता पूर्वक पहुँचाई जाती है।

पश्चिम मध्य रेलवे पर निम्नलिखित पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है :-

- | | | | |
|-----|---------------|---|--------------------------|
| (1) | राजभाषा सरिता | - | मुख्यालय, जबलपुर |
| (2) | प्रगतिपथ | - | जबलपुर मंडल |
| (3) | मंडल संवाद | - | भोपाल मंडल |
| (4) | चंबलवाणी | - | कोटा मंडल |
| (5) | प्रयास | - | कोटा कारखाना |
| (6) | रेल दर्पण | - | निशातपुरा कारखाना, भोपाल |
| (7) | डीजल संवाद | - | डीजल शेड, इटारसी |
| (8) | ज्ञान ज्योति | - | टीआरएस, इटारसी |

इस प्रकार पश्चिम मध्य रेलवे का राजभाषा विभाग राजभाषा प्रयोग-प्रसार हेतु सतत प्रयत्नशील है।

प्रभाकर भूषण

वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है - डॉ. सम्पूर्णानंद

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा पश्चिम मध्य रेलवे के कार्यालयों का निरीक्षण

पश्चिम मध्य रेलवे के गठन अर्थात् 01 अप्रैल 2003 के बाद संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा इस रेलवे के विभिन्न कार्यालयों का निरीक्षण किया गया है। चूँकि यह एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति है। अतः इस समिति के निरीक्षण संबंधी उत्तरदायित्वों का निर्वहन सावधानीपूर्वक करना आवश्यक है। इस समिति द्वारा पश्चिम मध्य रेलवे पर अब तक किए गए निरीक्षणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

1. भोपाल मंडल :

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 29.06.2005 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, भोपाल का निरीक्षण किया गया। तत्कालीन मंडल रेल प्रबंधक, श्री देवी प्रसाद पाण्डे तथा तत्कालीन अपर मंडल रेल प्रबंधक, श्री अनिल कुमार गुप्ता के मार्गदर्शन में तैयार निरीक्षण प्रश्नावली तथा राजभाषा प्रदर्शनी में प्रस्तुत सामग्री की सदस्यों द्वारा सराहना की गई। संसदीय राजभाषा समिति के माननीय संयोजक, डॉ. लक्ष्मी नारायण पाण्डेय एवं माननीय सांसदों द्वारा भोपाल मंडल की पावर प्वाइंट प्रस्तुति और राजभाषा कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

2. महाप्रबंधक कार्यालय, जबलपुर :

संसदीय समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 18.09.2006 को पश्चिम मध्य रेलवे, मुख्यालय का निरीक्षण किया गया। तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री महीप कपूर जी के मार्गदर्शन में यह निरीक्षण किया गया। जिसमें समिति के माननीय संयोजक डॉ. लक्ष्मी नारायण पाण्डेय सहित 04 सांसदों ने भाग लिया। इस अवसर पर राजभाषा विभाग द्वारा एक भव्य राजभाषा प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस निरीक्षण बैठक में समिति द्वारा महाप्रबंधक महोदय से प्रणाली मानचित्र, दुर्घटना नियमावली तथा पश्चिम मध्य रेलवे सामान्य एवं सहायक नियमावली के द्विभाषीकरण करने तथा अन्य विविध मदों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने संबंधी आश्वासन लिए गए। यह उल्लेखनीय है कि पश्चिम मध्य रेलवे ने उक्त सभी आश्वासन निर्धारित अवधि छः माह के भीतर पूर्ण कर उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय मिसाल कायम की। इस हेतु महाप्रबंधक महोदय द्वारा 25 हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया। इस बैठक में पमरे, मुख्यालय के विभाग प्रमुख, गृह मंत्रालय तथा रेल मंत्रालय के प्रतिनिधि शामिल हुए।

3. भरतपुर स्टेशन :

पश्चिम मध्य रेलवे, मुख्यालय के निरीक्षण के उपरांत समिति द्वारा दिनांक 20.09.2006 कोटा मंडल के भरतपुर स्टेशन का निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण बैठक में कोटा मंडल के तत्कालीन मंडल रेल प्रबंधक, श्री के.के. अटल, अपर मंडल रेल प्रबंधक, श्री एम.बी.विजय, पश्चिम मध्य रेल के तत्कालीन मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री वी.एन.त्रिपाठी सहित कोटा मंडल के शाखा प्रमुख भी शामिल हुए।

भारतीय भाषाएं नदियाँ हैं और हिंदी मठानदी - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

समिति द्वारा कोटा मंडल द्वारा प्रस्तुत निरीक्षण प्रश्नावली, राजभाषा प्रदर्शनी में प्रदर्शित कार्यों की सराहना की गई।

4. महाप्रबंधक कार्यालय, जबलपुर :

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य समिति द्वारा दिनांक 13.09.2012 को महाप्रबंधक कार्यालय, पश्चिम मध्य रेलवे के साथ निरीक्षण बैठक की गई। समिति के दो दिवसीय कार्यक्रम में दिनांक 13.08.2012 को जबलपुर स्थित केंद्रीय सरकार के 14 कार्यालय शामिल हुए जबकि दिनांक 14.09.2012 को बैंकों, उपक्रमों तथा निगमों के कुल 12 कार्यालय शामिल हुए। पश्चिम मध्य रेलवे के तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री सुनील वी. आर्या सहित प्रमुख विभागाध्यक्षों ने इस बैठक में भाग लिया। बैठक के दौरान माननीय सदस्यों द्वारा पश्चिम मध्य रेलवे पर राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की सराहना की गई तथा इस बैठक में शामिल केंद्रीय सरकार के अन्य कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों से रेलवे द्वारा किये जा रहे कार्यों का अनुरोध करने के निर्देश प्रदान किये गये जो कि पश्चिम मध्य रेलवे के लिए अत्यंत गौरव का विषय है।

5. भोपाल मंडल :

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 06.02.2013 को भोपाल मंडल कार्यालय का निरीक्षण किया गया। यह निरीक्षण तत्कालीन मंडल रेल प्रबंधक, श्री राजीव चौधरी जी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। इस निरीक्षण बैठक में पश्चिम मध्य रेल, मुख्यालय के तत्कालीन मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री सुनील कुमार बाजपेयी सहित गृह मंत्रालय तथा रेलवे बोर्ड के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। समिति द्वारा भोपाल मंडल द्वारा किये जा रहे राजभाषा कार्यों के साथ-साथ राजभाषा प्रदर्शनी में दर्शाए गए प्रगति की सराहना की।

6. महाप्रबंधक कार्यालय :

संसदीय समिति द्वारा दिनांक 07.02.2013 को महाप्रबंधक कार्यालय का निरीक्षण किया गया। तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री सुनील वी. आर्या के कुशल नेतृत्व में यह निरीक्षण संपन्न हुआ। तत्कालीन मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री सुनील कुमार बाजपेयी सहित पश्चिम मध्य रेलवे, मुख्यालय के समस्त विभाग प्रमुख, गृह मंत्रालय तथा रेलवे बोर्ड के प्रतिनिधि इस बैठक में शामिल हुए। संसदीय राजभाषा समिति की बैठक माननीय सांसद श्री रघुनन्दन शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में पश्चिम मध्य रेल, मुख्यालय द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली तथा इस अवसर पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी की माननीय सांसदों द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। माननीय समिति की सिफारिश पर रेलवे बोर्ड द्वारा इस सफल आयोजन के लिए पश्चिम मध्य रेल को 25 हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अलावा महाप्रबंधक महोदय द्वारा 2500/- रुपये के दो व्यक्तिगत तथा 10,000/- रुपये का एक सामूहिक पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

इस प्रकार पश्चिम मध्य रेलवे के गठन के उपरांत संसदीय राजभाषा समिति के उपरोक्त निरीक्षण कार्यक्रमों का इस रेलवे पर सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

प्रभाकर भूषण

वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

हिंदी द्वारा आने भारत को एक झूठ में पिरोया जा सकता है - स्वामी दयानंद सरस्वती

रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक विजेता हमारे अधिकारी

भारतीय रेलों पर राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) द्वारा विभिन्न पुरस्कार योजनाएं लागू हैं। इसी क्रम में वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड एवं उनसे ऊपर के स्तर के अधिकारियों को रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक से सम्मानित करने की परंपरा है। ये पदक उन उच्चाधिकारियों को प्रदान किये जाते हैं जिनका अपने कार्य क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने में उत्कृष्ट योगदान रहता है तथा जो अपने अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में काम करने की प्रेरणा देने के अलावा स्वयं भी हिंदी में काम करते हैं। इसके अंतर्गत प्रमाण-पत्र एवं 8 हजार रुपये की राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जाती है। पश्चिम मध्य रेल के गठन के बाद से अब तक रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक पुरस्कार से सम्मानित अधिकारी निम्नानुसार हैं -

- | | |
|---|--------|
| 1. श्री मंगल बिहारी विजय, अपर मंडल रेल प्रबंधक, कोटा | - 2007 |
| 2. श्री रामचंद्र राय, वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी | - 2008 |
| 3. श्री बी.एन. मीना, मुख्य कार्मिक अधिकारी | - 2009 |
| 4. श्री बी. देवा सिंह, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक | - 2010 |
| 5. श्री बी. के. रहेजा, मुख्य विद्युत इंजीनियर | - 2010 |
| 6. श्री अमिताभ निगम, अपर मंडल रेल प्रबंधक, जबलपुर | - 2011 |
| 7. श्री अनिल कुमार गुप्ता, मंडल रेल प्रबंधक, जबलपुर | - 2012 |
| 8. श्री राम गोपाल, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक | - 2013 |
| 9. श्री नंदकिशोर, मुख्य कार्मिक अधिकारी (प्रशा.) | - 2014 |
| 10. श्री आर. डी. मीना, मुख्य यात्री यातायात प्रबंधक | - 2015 |
| 11. श्री पी. के. बी. मेश्राम, अपर मंडल रेल प्रबंधक, कोटा | - 2016 |
| 12. श्री नवल किशोर श्रीवास्तव, वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखाधिकारी (नि.) | - 2017 |
| 13. श्री राजेश अर्गल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) | - 2018 |

बिपुल कुमार मंडल
कनिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

अमरुत भावतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वह देवनागरी ही हो सकती है - कृष्णा स्वामी अय्यर

हमारे मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

भारतीय रेल पर क्षेत्रीय रेलों के मुख्यालयों, मंडलों, उत्पादन इकाईयों, केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थानों, निर्माण संगठनों आदि के कार्यालयों में भारत सरकार की राजभाषा नीति का सम्यक एवं सुचारु अनुपालन कराने एवं प्रशासनिक दृष्टि से इन रेल कार्यालयों के हिंदी विभागों में विभागाध्यक्ष का पद न होने के कारण हिंदी विभागों के अधिकारियों जैसे उप महाप्रबंधक (राजभाषा), वरि. राजभाषा अधिकारी, राजभाषा अधिकारी तथा महाप्रबंधक कार्यालय के प्रमुखों के बीच उचित समन्वय बनाए रखने के उद्देश्य से विभिन्न रेल कार्यालयों में हिंदी का प्रशासनिक नियंत्रण ऐसे विभागाध्यक्ष/उप विभागाध्यक्ष यानि मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी को सौंपने की व्यवस्था की गई है, जिनमें हिंदी के प्रति अभिरूचि एवं समर्पण की भावना हो। रेलों पर यह व्यवस्था वर्ष 1976 से लागू है।

इस प्रकार हिंदी का प्रशासनिक नियंत्रण संभालने वाले ऐसे अधिकारी अपने मूल विभाग का काम देखने के साथ-साथ विभिन्न रेल कार्यालयों में स्थापित हिंदी विभागों के अंशकालिक विभागाध्यक्ष/उप विभागाध्यक्ष का दायित्व भी संभालते हैं। अप्रैल 2003 में पश्चिम मध्य रेलवे के गठन के उपरांत 07 अगस्त, 2003 को प्रथम मुख्य राजभाषा अधिकारी के रूप में श्री मनोज पाण्डे, मुख्य कार्मिक अधिकारी के नामन के साथ ही पमरे के राजभाषा विभाग ने एक पूर्ण विभाग के रूप में काम करना प्रारंभ किया और भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं विविध गतिविधियों की शुरुआत की। वर्तमान में श्री कार्तिक चौहान, प्रधान वित्त सलाहकार, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं श्री सुवीर श्रीवास्तव, उप मुख्य वाणिज्य प्रबंधक, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी के पद को सुशोभित किए हुए हैं। पश्चिम मध्य रेलवे पर अब तक नामित मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारियों की सूची निम्नानुसार है-

मुख्य राजभाषा अधिकारीगण

क्र.सं.	अधिकारी का नाम (सर्वश्री)	कार्यकाल	
		से	तक
01	मनोज पाण्डे	07.08.2003	30.09.2005
02	विजय नारायण त्रिपाठी	01.10.2005	30.12.2008
03	डॉ. पी.एल. बनकर	02.01.2009	03.02.2010
04	बी.एन. राजशेखर	04.02.2010	16.10.2010
05	बी.एन. मीना	18.10.2010	29.01.2013
06	सुनील कुमार बाजपेयी	30.01.2013	03.03.2013
07	एस. पी. त्रिवेदी	04.03.2013	03.03.2014
08	शरत् चंद्र जेठी	04.03.2014	07.08.2015
09	नवीन चोपड़ा	28.08.2015	03.01.2017
10	ओमप्रकाश सिंह	03.02.2017	12.02.2018
11	राजेश अर्गल	13.02.2018	25.02.2019
12	श्रीमती वंदना गर्ग	26.02.2019	11.12.2019
13	कार्तिक चौहान	14.01.2020	लगातार ...

उप मुख्य राजभाषा अधिकारीगण

क्र.सं.	अधिकारी का नाम (सर्वश्री)	कार्यकाल	
		से	तक
01	एम.के.सिंह	31.10.2003	12.12.2004
02	आर.एन.सुनकर	13.12.2004	12.04.2006
03	अजय कुमार	13.04.2006	27.07.2007
04	राजेश पाठक	09.08.2007	29.01.2009
05	दीपक कुमार गुप्ता	24.02.2009	10.01.2011
06	एस.डी.पाटीदार	12.01.2011	11.01.2014
07	सचिन शुक्ला	12.01.2014	30.06.2018
08	बसंत कुमार शर्मा	01.07.2018	26.04.2019
09	रोहित कुमार निरंजन	01.05.2019	30.04.2019
10	सुवीर श्रीवास्तव	01.06.2020	लगातार

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज

1.	सामान्य आदेश (कार्यालय आदेश, परिपत्र)	General orders (including office order & circulars)
2.	सूचनाएं (आरक्षण चार्ट सहित)	Notices (Including Reservation charts)
3.	अधिसूचनाएं	Notifications
4.	प्रेस विज्ञप्तियां/प्रेस नोट	Press Communiques /Press Notes
5.	संविदाएं	Contracts
6.	करार	Agreements
7.	लाइसेंस	Licences
8.	परमिट	Permits
9.	टेंडर फार्म और सूचनाएं	Forms of Tender & Notices
10.	संकल्प	Resolution
11.	नियम	Rules
12.	संसद में प्रस्तुत सरकारी प्रलेख/ कागजात	Official Documents, Papers laid before the Parliament
13.	संसद में प्रस्तुत प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट	Administrative Reports and other Reports laid Before the Parliament.
14.	प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट (संसद में प्रस्तुत की)गई रिपोर्टों के अलावा	Administrative or other Reports (Other than laid down before the parliament.)

राकेश कुमार मालवीय
वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत पुरस्कार योजना के अंतर्गत पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारी

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) द्वारा सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक एवं प्रशंसनीय प्रयोग करने वाले रेलवे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाता रहा है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष प्रत्येक रेलवे/उत्पादन कारखानों के लिए निर्धारित कोटे के अनुसार इस रेलवे के एक अधिकारी एवं तीन कर्मचारियों को पुरस्कार के रूप में 3 - 3 हजार रुपए की राशि एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं।

इस योजना के अंतर्गत लिपिक वर्गीय कर्मचारियों से जे ए ग्रेड स्तर तक के अधिकारियों की अनुशंसा इस आधार पर भेजी जा सकती है कि अहिंदी भाषी अधिकारी/कर्मचारी कम से कम अपना 50% तथा हिंदी भाषी अधिकारी/ कर्मचारी कम से कम अपना 75% कार्य हिंदी में करते हों। पश्चिम मध्य रेल के गठन के बाद से अब तक इस योजना के अंतर्गत पुरस्कृत अधिकारियों/ कर्मचारियों की सूची निम्नानुसार है-

आधार वर्ष 2003

श्री राजीव सक्सेना	- उप भंडार नियंत्रक, मुख्यालय
श्री वी.के.शर्मा	- मुख्य कार्यालय अधीक्षक, कोटा
श्री कौशिक सेनगुप्ता	- वरिष्ठ लिपिक, जबलपुर
श्रीमती संजना हीरा	- प्रधान लिपिक, भोपाल मंडल

आधार वर्ष 2004

श्री विजय भटनागर	- मंडल वाणिज्य प्रबंधक, भोपाल
श्री आर.एन.सुनकर	- उप मु. इंजीनियर (पुल), मुख्यालय
श्री टी. के. दास	- कार्यालय अधीक्षक, कोटा कारखाना
श्री सी.आर.अंत्रीवाले	- वरि. से. इंजी., भोपाल कारखाना
श्री पी. के. जैन	- सहायक यार्ड मास्टर, भोपाल
श्री मधुसूदन	- वरि.मं.सि.एवं दूर. इंजी., भोपाल

आधार वर्ष 2005

- कोई पुरस्कृत नहीं।

आधार वर्ष 2006

श्री शोभन चौधुरी	- वरि.मं.सि.एवं दूर सं.इंजी., जबलपुर
श्री भीमसेन गौतम	- प्रधान लिपिक, भोपाल
श्री दिलीप सिंह	- वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी, कोटा
श्री वेद प्रकाश	- लेखा सहायक, मुख्यालय

आधार वर्ष 2007

श्री मनोज जैन	- वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक, कोटा
श्रीमती जॉली जॉनसन	- अंग्रेजी आशुलिपिक, भोपाल
श्री मोहम्मद सलीम	- प्रधान लिपिक, भोपाल कारखाना
श्री दुर्गा सिंह पटेल	- मुख्य कार्यालय निरीक्षक, जबलपुर
श्री नरेश वाथरे	- सहा. परि. प्रबंधक, मुख्यालय
श्री दिनेश रिछारिया	- स्टेशन मास्टर, इटारसी

आधार वर्ष 2008

श्री मुकेश गुप्ता	- स. वा. प्र., जबलपुर मंडल
श्रीमती रेनू सिंह	- प्रवर लिपिक, भोपाल मंडल
श्री मुकेश साहू	- प्रधान लिपिक, जबलपुर मंडल
श्री ज्ञान सिंह हल्दिया	- वरि. अ. अधिकारी, मुख्यालय

देवनागरी ध्वनि शान्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है - रविशंकर शुक्ल

आधार वर्ष 2009

- श्री उमेश बलौंदा – सचिव/ महाप्रबंधक
श्री संतोष कुमार – निजी सहायक मुख्यालय
श्री धनंजय सिंह – प्रधान लिपिक, कोटा कारखाना
श्री वी. पी. सिंह – गार्ड, भोपाल मंडल

आधार वर्ष 2010

- श्री असीम कुमार – वरि. मं. सुरक्षा अधिकारी, जबलपुर
श्री मृत्युंजय कुमार – सतर्कता निरीक्षक, मुख्यालय
श्री राकेश कुमार – वरिष्ठ आशु, लेखा, मुख्यालय
श्री उमेश विश्वकर्मा – कार्यालय अधीक्षक, मुख्यालय

आधार वर्ष 2011

- श्री ए.के. अग्निहोत्री – वरि. मं. सु. अधिकारी, भोपाल
श्री एस. कुमार गौतम – मु. कार्या. अधी., परिचालन
श्री एन. पी. चौरे – लेखा सहायक, भोपाल मंडल
श्री मिथिलेश कुमार मौर्य – अवर लिपिक, सतर्कता, मुख्यालय

आधार वर्ष 2012

- श्री ए.सी. नायर – निजी सचिव, महाप्रबंधक
श्री पी.आर.बहादुर – मु. कार्यालय अधीक्षक, भोपाल
श्री सुनील कुमार नेमा – कार्यालय अधीक्षक, जबलपुर
श्री सी. एल. विश्वकर्मा – वरि. से. इंजी., यांत्रिक., मुख्यालय

आधार वर्ष 2013

- श्री संजय कुमार ओसवाल – वरि.सतर्कता अधी., मुख्यालय
श्री बिन्द्रावन यादव – वरिष्ठ लिपिक, परिचालन
श्री डी.के. शुक्ला – मुख्य कार्यालय अधीक्षक, वाणिज्य
श्री चितरंजन प्रसाद सिंह – अवर लिपिक, कार्मिक

आधार वर्ष 2014

- श्री एन. डी. गांगुर्डे – वरि. मं. का. अधी., भोपाल
श्री आर. आर. नायर – आशुलिपिक, भोपाल मंडल
श्रीमती सोनिका खरे – कार्या. अधी., रेल भर्ती बोर्ड, भोपाल
श्री अशोक कुमार गोहिया – कार्या. अधी., कोटा कारखाना

आधार वर्ष 2015

- श्री अरुण कुमार शर्मा – वरि. सतर्कता अधी., मुख्यालय
श्री ओम प्रकाश बिंजवे – स्टे. प्रबं., बनखेड़ी, जबलपुर मंडल
श्री राम सिंह मीना – कार्यालय अधीक्षक, कोटा मंडल
श्री रमेश देवतले – अवर लिपिक, भोपाल कारखाना

आधार वर्ष 2016

- श्री खेम चंद कर्दम – स्टेशन निदेशक, कोटा मंडल
श्री गजनपर आलम – कार्या. अधीक्षक, भंडार, मुख्यालय
श्री प्रशांत कुमार अहिरवार – वरि.अनु.अधी., लेखा, मुख्यालय
श्रीमती सीमा अग्रवाल – कार्यालय अधीक्षक, भोपाल मंडल

आधार वर्ष 2017

- श्री रविंद्र कुमार – निजी सचिव, संरक्षा, मुख्यालय
श्रीमती मीना पी.बाखरू – मु. कार्या.अधी., कार्मिक, मुख्यालय
श्रीमती सरिता बघेल – उप निरीक्षक, सुरक्षा, मुख्यालय
श्री टी. के. दास – मु. कार्या.अधी., कोटा कारखाना

आधार वर्ष 2018 (प्रस्तावित)

- श्री पंकज शर्मा – उप मु.सा. प्रबंधक, भंडार, मुख्यालय
श्री मोहम्मद सादिक – वरि.प्रचार निरी., जबलपुर मंडल
श्री श्रीनिवासन – कार्यालय अधीक्षक, भोपाल मंडल
श्री भानु प्रताप सिंह – सीनि.सेक्शन इंजीनियर, कोटा मंडल

बिपुल कुमार मंडल

कनिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

हिंदी चिनकाल ओ ऐन्नी भाषा नही है जिनने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

रेलवे बोर्ड स्तर पर प्राप्त शील्ड एवं ट्राफी

रेल मंत्री राजभाषा शील्ड	-	2014	-	डीजल शेड, इटारसी
रेल मंत्री राजभाषा शील्ड	-	2015	-	विद्युत लोको शेड, तुगलकाबाद
रेल मंत्री राजभाषा शील्ड	-	2016	-	डीजल लोको शेड, कटनी
रेल मंत्री राजभाषा शील्ड	-	2017	-	विद्युत लोको शेड, इटारसी
रेल मंत्री राजभाषा शील्ड	-	2018	-	विद्युत लोको शेड, कटनी

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी चल शील्ड - 2010 - कोटा मंडल

रेल मंत्री राजभाषा ट्रॉफी - 2011, 2017 - महाप्रबंधक कार्यालय

रेलवे बोर्ड की विभिन्न पुरस्कार योजना के अंतर्गत पुरस्कृत हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी

प्रेमचंद पुरस्कार

2010 -	श्री शरद उपाध्याय, कार्यालय अधीक्षक, कोटा मंडल	-	द्वितीय पुरस्कार
2011 -	श्री के.एल. पाण्डेय, मुख्य परिचालन प्रबंधक, मुख्यालय	-	तृतीय पुरस्कार
2012 -	श्री शरद उपाध्याय, कार्यालय अधीक्षक, - कोटा मंडल	-	प्रथम पुरस्कार
2013 -	श्री रघुराज सिंह कर्मयोगी, से.नि., सहायक निर्माण प्रबंधक	-	तृतीय पुरस्कार
2014 -	श्री कुंदन कुमार, मुख्य कारखाना प्रबंधक, कोटा	-	प्रथम पुरस्कार
2015 -	श्री शरद उपाध्याय, कार्यालय अधीक्षक, कोटा मंडल	-	द्वितीय पुरस्कार

मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार

2013 -	श्री अरुण श्रीवास्तव, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी	-	प्रथम पुरस्कार
2014 -	श्री कमल किशोर दुबे, जनसंपर्क अधिकारी	-	तृतीय पुरस्कार
2015 -	श्री ज्योति खरे-एमसीएम, डीजल लोको शेड, कटनी	-	प्रथम पुरस्कार
2016 -	श्री संत कुमार मालवीय, वरिष्ठ तकनीशियन	-	द्वितीय पुरस्कार

लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन पुस्तक

2014 -	डॉ. मुहम्मद शमशाद, टिकट निरीक्षक	-	तृतीय पुरस्कार
2017 -	श्री नितिन मराठे, मुख्य लोको निरीक्षक, भोपाल	-	तृतीय पुरस्कार

रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता

2014 -	श्री नीरज दुबे, उप सचिव, गोपनीय	-	प्रथम पुरस्कार
2016 -	श्री कमल किशोर दुबे, जनसंपर्क अधिकारी	-	प्रथम पुरस्कार
2016 -	श्री इंद्र नारायण बघेल, प्रधान आरक्षक	-	द्वितीय पुरस्कार

हिंदी जैन्नी अन्गल भाषा दून्नी नठीं है - मौलाना हसरत मोहानी

रेल यात्रा वृत्तांत पुरस्कार

2013 -	श्रीमती भारती द्विवेदी	- तृतीय पुरस्कार
2014 -	श्री डी. के. शुक्ला, मुख्य कार्यालय अधीक्षक	- प्रथम पुरस्कार
2016 -	श्रीमती निर्मला शुक्ला	- तृतीय पुरस्कार
2017 -	श्री शरद उपाध्याय, कार्यालय अधीक्षक, कोटा मंडल	- द्वितीय पुरस्कार
	श्री शमशाद खान, वरिष्ठ अनुवादक	- तृतीय पुरस्कार
	श्री संजीव कुमार तिवारी, उप मु.सि. एवं दूर संचार इंजी.	- प्रेरणा पुरस्कार
2019 -	इंजी. आशा शर्मा	- प्रेरणा पुरस्कार
	श्रीमती कविता सिंह	- प्रेरणा पुरस्कार

अखिल रेल हिंदी निबंध, वाक् तथा टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिताएं

2005 -	टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता -	श्री अजय भालेराव, मुख्य टिकट निरीक्षक	- प्रथम पुरस्कार
	वाक् प्रतियोगिता -	श्री राधे श्याम मालवीय	- प्रथम पुरस्कार
	निबंध प्रतियोगिता -	श्री राजा राय, वरिष्ठ लिपिक	- द्वितीय पुरस्कार
2007 -	टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता -	श्री राजेन्द्र सिंह यादव, संचालन निरीक्षक, भोपाल मंडल	- प्रेरणा पुरस्कार
2013 -	वाक् प्रतियोगिता -	सुश्री दीपा सिंह, कार्यालय अधीक्षक, मुख्यालय	- प्रथम पुरस्कार
		श्री कौशिक सेनगुप्ता, प्रवर लिपिक, मुख्यालय	- प्रेरणा पुरस्कार
2014 -	टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता -	श्री डी. के. शुक्ला, मुख्य कार्यालय अधीक्षक	- तृतीय पुरस्कार
	वाक् प्रतियोगिता -	श्री कौशिक सेनगुप्ता, प्रवर लिपिक, मुख्यालय	- प्रेरणा पुरस्कार
		श्री राजा राय, कार्यालय अधीक्षक, मुख्यालय	- प्रेरणा पुरस्कार
2015 -	टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता -	श्री रमेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक, मुख्यालय	- प्रेरणा पुरस्कार
2016 -	निबंध प्रतियोगिता -	श्री संत कुमार मालवीय, वरि. तक., भोपाल कारखाना	- प्रथम पुरस्कार
		श्रीमती मनीषा श्रीवास्तव, आशुलिपिक, भोपाल मंडल	- प्रेरणा पुरस्कार
	टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता -	श्री डी.के. शुक्ला, मु. कार्या. अधीक्षक, वाणिज्य, मुख्यालय	- द्वितीय पुरस्कार
	वाक् प्रतियोगिता -	श्री सत्य मित्र चौहान, मु. कार्या. अधीक्षक, भोपाल मंडल	- द्वितीय पुरस्कार
2017 -	टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता -	श्री अमित कांत समाधिया, मुख्यालय	- तृतीय पुरस्कार
	वाक् प्रतियोगिता -	श्री सर्वेश पाण्डेय, मुख्यालय	- प्रेरणा पुरस्कार
2018 -	टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता -	श्री रमेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक	- तृतीय पुरस्कार

बिपुल कुमार मंडल

कनिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

आप जिन्न तनह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उन्नी तनह लिखवा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होना चाहिए - महावीर प्रसाद द्विवेदी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिनांक 22.11.1976 के का.ज्ञा.सं. 1/14011/12/76-रा.भा. (का-1) के अनुसार देश के उन सभी नगरों में जहां केंद्रीय सरकार के 10 या इससे अधिक कार्यालय हों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जाता है। समिति का गठन राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर भारत

सरकार के सचिव(राजभाषा) की अनुमति से किया जाता है। इन समितियों की अध्यक्षता नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि के वरिष्ठतम अधिकारियों में से किसी एक के द्वारा की जाती है। अध्यक्ष को राजभाषा विभाग द्वारा नामित किया जाता है। नामित किए जाने से पूर्व प्रस्तावित अध्यक्ष से समिति की अध्यक्षता के संबंध में लिखित सहमति प्राप्त की जाती है। नगर में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय, उपक्रम, बैंक आदि अनिवार्य रूप से इस समिति के सदस्य होते हैं। उनके वरिष्ठतम अधिकारियों (प्रशासनिक प्रधानों) से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लें। समिति के सचिवालय के संचालन के लिए समिति के अध्यक्ष द्वारा अपने कार्यालय से अथवा किसी सदस्य कार्यालय से एक हिंदी विशेषज्ञ को उनकी सहमति से समिति का सदस्य-सचिव मनोनीत किया जाता है। अध्यक्ष की अनुमति से समिति के कार्यकलाप सदस्य-सचिव द्वारा किए जाते हैं। इन समितियों की वर्ष में दो बैठकें आयोजित की जाती हैं। राजभाषा विभाग द्वारा समिति की बैठकें आयोजित करने के लिए एक कैलेंडर बनाया जाता है जिसमें



दिनांक 16.12.2019 को नराकास की 6वीं बैठक के दौरान श्री शोभन चौधुरी, अपर महाप्रबंधक एवं तत्कालीन मुराधि श्रीमती वंदना गर्ग द्वारा मंडल रेल प्रबंधक, जबलपुर को प्रथम, वरि.मंडल प्रबंधक, भारतीय जीवन बीमा निगम को द्वितीय तथा क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, उप क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया

प्रत्येक समिति की बैठक हेतु एक निश्चित महीना निर्धारित किया जाता है। इन बैठकों के आयोजन संबंधी सूचना समिति के गठन के समय दी जाती है और निर्धारित महीनों में समिति को अपनी बैठकें आयोजित करनी होती हैं। इन समितियों की बैठकों में नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि के प्रशासनिक प्रधान भाग लेते हैं। राजभाषा विभाग

(मुख्यालय) एवं इसके क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के अधिकारी भी इन बैठकों में राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। नगर स्थित केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की शाखाओं में से किसी एक प्रतिनिधि एवं हिंदी शिक्षण योजना के किसी एक अधिकारी को भी बैठक में आमंत्रित किया जाता है।

नराकास समिति के गठन का उद्देश्य केंद्रीय सरकार के देश भर में फैले हुए कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एक संयुक्त मंच प्रदान करना है तथा इन समितियों की बैठकों के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि के कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा करना और राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करना है।

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिनांक 02.10.2015 के पत्र संख्या 12014/13/2015-राभा (का-2) द्वारा जारी कार्यालय ज्ञापन के अनुसार जबलपुर स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों की नराकास समिति को

विभाजित करके दो नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया गया है। इस नवगठित नराकास के अध्यक्ष का दायित्व महाप्रबंधक, पमरे को सौंपा गया है। वर्तमान में इस समिति के अंतर्गत 50 केन्द्रीय सरकार के कार्यालय शामिल हैं। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल द्वारा प्रेषित कार्यक्रम के अनुसार इस समिति की बैठक हेतु कलेण्डर वर्ष के जुलाई एवं दिसंबर माह निर्धारित किए गए हैं। इन बैठकों में सदस्य कार्यालयों द्वारा सचिवालय कार्यालय को प्रेषित तिमाही रिपोर्टों पर चर्चा की जाती है।

इसी क्रम में नराकास कार्यालय क्रमांक 02, सचिवालय कार्यालय पमरे द्वारा श्री रमेश चंद्रा, तात्कालीन महाप्रबंधक जी की अध्यक्षता में दिनांक 22.07.2016 को 50 सदस्यीय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय क्रमांक 02, जबलपुर की प्रथम छःमाही बैठक का आयोजन किया गया। इस नराकास की द्वितीय छःमाही बैठक तात्कालीन महाप्रबंधक, पमरे एवं अध्यक्ष नराकास श्री गिरीश पिल्लई की अध्यक्षता में 05.06.2017 को आयोजित की गई।

दिनांक 13.12.2017 को आयोजित तृतीय बैठक में राजभाषा हिंदी में सर्वाधिक एवं सराहनीय कार्य करने वाले कार्यालयों को राजभाषा चल शील्ड प्रदान करने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया। इसी क्रम में सचिवालय द्वारा निर्धारित प्रारूप में प्राप्त रिपोर्टों के मूल्यांकन के आधार पर दिनांक 05.12.2018 को पश्चिम मध्य रेलवे के तात्कालीन महाप्रबंधक एवं नराकास अध्यक्ष श्री अजय विजयवर्गीय की अध्यक्षता में आयोजित नराकास कार्यालय,

क्रमांक 02 की चतुर्थ बैठक के दौरान मंडल रेल प्रबंधक, भारतीय जीवन बीमा निगम, जबलपुर को प्रथम, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक, हिंदुस्तान पेट्रोलिय कॉर्पोरेशन लिमिटेड, जबलपुर को द्वितीय तथा केन्द्रीय विद्यालय, सीएमएम, जबलपुर को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस समिति की दिनांक 15.07.2019 को तात्कालीन अपर महाप्रबंधक, श्री अंशुल गुप्ता जी की अध्यक्षता में आयोजित 05वीं बैठक के दौरान पत्रिका 'सरल' के प्रथम अंक का विमोचन किया गया।

इस समिति की दिनांक 16.12.2019 को अपर महाप्रबंधक, पमरे, श्री शोभन चौधुरी की अध्यक्षता में आयोजित 6 वीं बैठक के दौरान मंडल रेल प्रबंधक, जबलपुर को प्रथम, वरि.मंडल प्रबंधक, भारतीय जीवन बीमा निगम को द्वितीय तथा क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, उप क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अब तक नराकास कार्यालय क्रमांक 02, सचिवालय कार्यालय, पमरे द्वारा कुल 06 बैठकें आयोजित की जा चुकी हैं। इस समिति के माध्यम से सभी सदस्य कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग-प्रसार की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हर संभव प्रयास किये जा

रहे हैं। चूंकि जबलपुर स्थित सभी कार्यालय 'क' क्षेत्र में स्थित हैं। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 'क' क्षेत्र स्थित सभी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के लिए अधिकांश मदों में शत-प्रतिशत हिंदी प्रयोग का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अतः इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु हमारे सभी कार्यालय सतत् प्रयत्नशील हैं।

दीपक पाटिल

वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय



इन समितियों की बैठकों के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि के कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा करना और राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करना है।

राष्ट्र भाषा के बिना एक राष्ट्र गूंगा है - महात्मा गाँधी

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन का मुख्य उद्देश्य सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए केन्द्रीय सरकार के सभी कर्मचारियों को इन कार्यशालाओं के माध्यम से हिंदी में प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें सरकारी कामकाज में हिंदी में प्रयोग के लिए आवश्यक योग्यता प्रदान करना है।



इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उसके नियंत्रणाधीन उपक्रमों, निगमों, निकायों, राष्ट्रीयकृत बैंको में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाईयों व झिझक को दूर करने के लिए केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान एवं केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में वर्ष 1985 से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन नियमित रूप से किया जा रहा है।

पश्चिम मध्य रेलवे पर भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने तथा कर्मचारियों को हिंदी कार्य में आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के उद्देश्य से इस रेलवे के गठन के साथ ही हिंदी कार्यशालाओं का नियमित रूप से आयोजन किया जा रहा है। इन कार्यशालाओं में व्याख्याता के रूप में हिंदी का अच्छा ज्ञान रखने वाले व्याख्याताओं को आमंत्रित किया जाता है। साथ ही इन कार्यशालाओं में राजभाषा के अलावा भी अन्य विभागों जैसे- कार्मिक, सामान्य प्रशासन, लेखा आदि विभाग से संबंधित जानकारी भी प्रशिक्षणार्थियों को समय-समय पर उपलब्ध कराई जाती है तथा आवश्यक सहायक सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है।

कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों में हिंदी कार्य के प्रति

रुचि जागृत करने के उद्देश्य से राजभाषा नीति से संबंधित प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है। जिसमें प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाता है। इसके अतिरिक्त कार्यशाला के समापन के अवसर पर कर्मचारियों को उनके दैनिक सरकारी कामकाज में सहायता हेतु एक पॉकेट डिक्शनरी भी नियमित रूप से वितरित की जाती है। पमरे के गठन से ही इस रेलवे पर प्रतिवर्ष गृहमंत्रालय द्वारा निर्धारित नियमानुसार कार्यशालाओं का नियमित रूप से आयोजन किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि मुख्यालय के अधिकांश कर्मचारी इस कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं तथा इस कार्यशाला से प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत वे अपने सरकारी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग कर पा रहे हैं और जैसा कि इन कार्यशालाओं में प्रशिक्षित कर्मचारियों से अपेक्षा की जाती है कि वे प्रशिक्षण के उपरांत अपने-अपने विभागों में अपना अधिकांश कार्य हिंदी में करें।

इस रेलवे पर अब तक कुल 272 कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है। जिनमें कुल 45,279 कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है।

दीपक पाटिल

वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

हिंदी कार्यशालाओं का उद्देश्य यही है कि जो कार्य आज अंग्रेजी में किया जा रहा है, आगे चल कर वहाँ हिंदी में हो।

रेल हिंदी नाट्योत्सव



जैसा कि हम सभी जानते हैं कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार में सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे लोकगीत, नृत्य, कवि सम्मेलन, रंगमंच आदि कार्यक्रमों की अहम भूमिका होती है। इस प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए रेल मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष अखिल भारतीय स्तर पर रेल हिंदी नाट्योत्सव प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। जिसमें क्षेत्रीय रेलों और उत्पादन कारखानों के नाटक दल भाग लेते हैं। इस आयोजन में भाग लेने वाले रेलकर्मियों एवं उनके द्वारा प्रस्तुत नाटक को रेलवे बोर्ड द्वारा प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार राशि प्रदान कर पुरस्कृत किया जाता है। उल्लेखनीय है कि पश्चिम मध्य रेलवे प्रति वर्ष आयोजित नाट्यस्पर्धा में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करता आ रहा है। न केवल हमने सहभागिता सुनिश्चित की वरन् प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाली इस प्रतियोगिता में अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन देते हुए, कई पुरस्कार प्राप्त करने में सफल रहे हैं जिसका विवरण इस प्रकार है :-

01. वर्ष 2005 में उदयपुर में आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव प्रतियोगिता में पश्चिम मध्य रेलवे द्वारा मंचित नाटक 'उजबक राजा तीन डकैत' को सशक्त प्रस्तुतिकरण के लिए तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। साथ ही सर्वश्रेष्ठ सह कलाकार का पुरस्कार भी पमरे को प्राप्त हुआ।
02. 19 दिसंबर 2006 से 22 दिसंबर 2006 तक डीजल रेल इंजन कारखाना, वाराणसी में आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव प्रतियोगिता में पश्चिम मध्य रेलवे के नाटक 'भेड़िया तंत्र' को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। साथ ही सर्वश्रेष्ठ संगीत का भी पुरस्कार इस नाटक को प्रदान किया गया।
03. 02.04.2013 से 04.04.2013 तक क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर में आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव में पश्चिम मध्य रेलवे को मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित नाटक 'बड़े भाई साहब' को सर्वश्रेष्ठ नाटक, इसी नाटक के निर्देशक श्री के.एल. पांडे, तत्कालीन मुख्य परिचालन प्रबंधक को सर्वश्रेष्ठ निदेशक एवं श्री संजय गर्ग, कार्यालय अधीक्षक को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार प्राप्त हुआ। साथ ही साथ सर्वश्रेष्ठ ध्वनि एवं सर्वश्रेष्ठ प्रकाश परिकल्पना का पुरस्कार भी इस नाटक को प्राप्त हुआ।
04. उल्लेखनीय है कि 30.07.2013 को रेलवे बोर्ड में मुंशी प्रेमचंद जयंती के उपलक्ष्य में नाटक 'बड़े भाई साहब' का मंचन किया गया। इस नाटक के मंचन हेतु तत्कालीन रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष महोदय द्वारा पश्चिम मध्य रेलवे रु 50 हजार के नगद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
05. 25.08.2014 से 27.08.2014 तक रेल निलयम, दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद में आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव प्रतियोगिता में पश्चिम मध्य रेलवे, के कोटा मंडल द्वारा प्रस्तुत नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम' को सर्वश्रेष्ठ नाटक से सम्मानित किया गया। इसी नाटक के लिए श्री चंदन मुखर्जी को सर्वश्रेष्ठ निदेशक से सम्मानित किया गया।
06. 08.01.2020 से 10.01.2020 तक पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर में आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव प्रतियोगिता में पश्चिम मध्य रेलवे द्वारा मंचित नाटक 'रख दे कोई जरा सी खाके वतन कफन में' को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अलावा भी समय-समय पर इस रेलवे पर विभिन्न आयोजनों के दौरान सांस्कृतिक अकादमी, पमरे द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों/नाटकों आदि का मंचन किया जाता है।

दीपक पाटिल, वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

हिंदी साहित्य की नकल पर कोई साहित्य तैयार नहीं होता - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

राजभाषा प्रगति का निरीक्षण

रेलवे के कार्यालयों में भारत सरकार की राजभाषा नीति विषयक आदेशों के अनुपालन तथा प्रगति पर नजर रखने के लिए राजभाषा प्रगति का निरीक्षण एक आवश्यक अंग है। राजभाषा विभाग के अधिकारियों के अलावा सभी रेल अधिकारियों द्वारा अपने विभागीय निरीक्षणों के दौरान राजभाषा प्रगति का निरीक्षण करना और अपनी निरीक्षण रिपोर्ट हिंदी में जारी करना अनिवार्य है। साथ ही विभागीय निरीक्षण रिपोर्टों में राजभाषा विषयक निरीक्षण का उल्लेख भी आवश्यक है तदनुसार पश्चिम मध्य रेलवे पर सभी रेल अधिकारियों द्वारा राजभाषा प्रगति का भी निरीक्षण किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि इस रेलवे में महाप्रबंधक वार्षिक निरीक्षण के दौरान मुख्य राजभाषा अधिकारी द्वारा स्टेशनों/कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण किया जाता है और राजभाषा में उल्लेखनीय कार्य करने वाले स्टेशनों/कार्यालयों का पुरस्कृत किया जाता है। साथ ही महाप्रबंधक महोदय की निरीक्षण रिपोर्ट में इसका उल्लेख भी किया जाता है।

भोपाल मंडल पर राजभाषा प्रगति

01. **राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक** - मंडल पर संचालित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की समीक्षा बैठक प्रत्येक तिमाही में आयोजित की जाती है।
02. **उप समितियों की बैठकें** - मंडल पर संचालित 06 उपसमितियों में प्रत्येक तिमाही में राजभाषा समीक्षा बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है।
03. **कार्यशाला** - मंडल पर वर्ष में लगभग 05-06 कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। जिनमें कर्मचारियों को राजभाषा संबंधी जानकारी के साथ-साथ कार्मिक/ लेखा एवं सामान्य ज्ञान की जानकारी भी दी जाती है। इसी प्रकार 06 उपसमितियों में भी हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। कार्यशाला की समाप्ति पर सभी प्रशिक्षित कर्मचारियों को पॉकेट डिक्शनरी/शब्दकोश का भी वितरण किया जाता है। विगत 04 वर्षों में कार्यशालाओं का आयोजन तथा उनमें प्रशिक्षित कर्मचारी निम्नानुसार हैं -

कार्यालय	प्रशिक्षित कर्मचारियों की संख्या			कुल योग
	2017-18	2018-19	2019-20	
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, भोपाल -	42	44	20	106
डीजल शेड, इटारसी -	18	20	00	38
विद्युत लोको शेड, इटारसी -	25	25	00	50

04. **केन्द्रीय हिंदी शिक्षण योजना** - मंडल पर डीजल शेड, इटारसी में 16 नये कर्मचारियों को हिंदी टंकण का प्रशिक्षण दिया गया।
05. **हिंदी पुस्तकालय** - मंडल पर वर्तमान में 08 हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय संचालित हैं। जिनमें कुल 4,197 पुस्तकें उपलब्ध है। सभी पुस्तकालयों में फर्नीचर आदि की समुचित व्यवस्था है।
06. **मंडल पर राजभाषा सप्ताह/ पखवाड़ा का आयोजन** - मंडल पर प्रतिवर्ष राजभाषा सप्ताह/पखवाड़ा का आयोजन

किया जाता है। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं / प्रश्नमंच / संगोष्ठी/ कवि सम्मेलन आदि कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। विगत तीन वर्षों के दौरान राजभाषा सप्ताह के अवसर पर पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारी निम्नानुसार हैं :-

विगत तीन वर्षों में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारी

	2017-18	2018-19	2019-20	कुल योग
अधिकारी	10	10	12	32
कर्मचारी	62	63	63	188
कुल योग	72	73	75	220



07. **उप समितियों में राजभाषा सप्ताह** - मंडल पर संचालित उप समितियों में राजभाषा सप्ताह / प्रतियोगिताएं/ प्रश्नमंच एवं कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया जाता है जिनमें कर्मचारी बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।
08. **तकनीकी संगोष्ठी** - मंडल के डीजल शेड, इटारसी में समय-समय तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है।
09. **साहित्यकारों की जयंती** - मंडल पर मुंशी प्रेमचंद हिंदी पुस्तकालय संचालित है अतः प्रतिवर्ष 31 जुलाई को प्रेमचंद जयंती का आयोजन किया जाता है। साथ ही साथ उप समितियों में भी साहित्यकारों की जयंती समारोह का आयोजन किया जाता है।
10. **महाप्रबंधक निरीक्षण** - मंडल पर महाप्रबंधक वार्षिक निरीक्षण के अवसर पर विगत 02 वर्षों से भव्य राजभाषा प्रदर्शनी लगाई जा रही है। वर्ष 2018-19 में गुना-मक्सी सेक्शन में महाप्रबंधक वार्षिक निरीक्षण के दौरान ब्यावरा-राजगढ़ रेलवे स्टेशन में राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई थी। इसी प्रकार वर्ष 2019-20 में गुना-बीना सेक्शन के वार्षिक निरीक्षण के दौरान अशोक नगर रेलवे स्टेशन पर राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई थी। प्रदर्शनी में मंडल पर हो रहे हिंदी कार्यों को दर्शाया जाता है। इनकी प्रशंसा महाप्रबंधक सहित सभी उच्चाधिकारियों ने की है।
11. **संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण** - मंडल पर 06 जून 2005 में एवं 06 फरवरी 2013 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा मंडल कार्यालय में हो रहे राजभाषा कार्यों का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर भी राजभाषा कार्यों को प्रदर्शनी द्वारा बखूबी दर्शाया गया, जिसकी सभी माननीय संसद सदस्यों ने प्रशंसा की।

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ अकती है - बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

- 
12. **पत्रिका प्रकाशन** - भोपाल मंडल से गृह पत्रिका 'मंडल संवाद' का प्रकाशन किया जाता है। इसी प्रकार डीजल शेड इटारसी से भी 'डीजल संवाद' राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। यह पत्रिकाएं वर्ष 2005 से नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही हैं।
 13. **सहायक साहित्य का प्रकाशन**- पत्रिका के अलावा मंडल पर पोस्टर/पॉकेट डायरी/ पेंपलेट्स आदि का प्रकाशन कर सभी शाखा अधिकारियों एवं मंडल के विभिन्न कार्यालयों के कर्मचारियों में इनका वितरण किया जाता है।
 14. **राजभाषा दैनंदनी का प्रकाशन** - मंडल पर प्रत्येक वर्ष राजभाषा दैनंदनी का प्रकाशन किया जाता है। इस दैनंदनी में भी राजभाषा संबंधी जानकारी प्रोत्साहन योजनाएं/ शब्दार्थ एवं वार्षिक कैलेण्डर आदि की जानकारी दी जाती है।
 15. **आज का सुविचार बोर्ड** - मंडल कार्यालय में प्रवेश द्वार एवं कैंटीन द्वार पर प्रतिदिन आज का सुविचार बोर्ड पर लिखा जाता है।
 16. **डीजल शेड इटारसी में पेड़ों पर नाम** - मंडल के डीजल शेड, इटारसी परिक्षेत्र में लगे पेड़ों पर उनकी जानकारी सहित पेड़ों के नाम हिंदी में लिखवाये गये हैं।
 17. **मोटिवेशन** - मंडल कार्यालय के राजभाषा अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा समय-समय पर विभागों में जाकर कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के प्रति जागरूक किया जाता है और उन्हें प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी जाती है।
 18. **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति** - भोपाल नगर में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छःमाही बैठकों में मंडल रेल प्रबंधक/अपर मंडल रेल प्रबंधक नियमित रूप से भाग लेते हैं।
 19. **सर्वश्रेष्ठ अनुभाग पुरस्कार योजना** - भोपाल मंडल में मंडल रेल प्रबंधक द्वारा डीजल शेड एवं विद्युत शेड, इटारसी में सर्वश्रेष्ठ अनुभाग राजभाषा पुरस्कार योजना लागू की गई है। इन दोनों शेडों में प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन उप समिति की बैठकों के अवसर पर दो - दो हजार के नकद पुरस्कार दिये जाते हैं।
 20. **अन्य उल्लेखनीय कार्य** -
 01. वर्ष 2018-19 के दौरान महाप्रबंधक राजभाषा शील्ड, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, पमरे, भोपाल को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने तथा राजभाषा हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु प्रदान की गई है।
 02. वर्ष 2018-19 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इटारसी द्वारा डीजल शेड, इटारसी को उत्कृष्ट कार्य एवं उचित सहयोग हेतु विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।
 03. श्री नितिन मराठे, लोको निरीक्षक (टीआरओ), भोपाल को वर्ष 2018-19 के दौरान उनकी लिखित पुस्तक 'रेल के हीरो' नामक पुस्तक को गृहमंत्रालय की लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना के अंतर्गत तृतीय पुरस्कार और 7000/- की नकद राशि से सम्मानित किया गया है। इसी प्रकार वर्ष 2019-20 में भी उनकी लिखित पुस्तक 'सारथी' को गृह मंत्रालय की लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र एवं रुपये 10,000/- की नकद राशि से सम्मानित किया गया है।

संतलाल मर्सकोले

राजभाषा अधिकारी, भोपाल मंडल

हिंदी एक अमूल्य भाषा है। इसे अनायास अनिवार्य लोग अपना काम निकाल लेते हैं - जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

राजभाषा एवं जबलपुर मंडल

क्षेत्रीय रेलों के विस्तारीकरण के परिणामस्वरूप 2003 से जबलपुर मंडल पश्चिम मध्य रेल के क्षेत्राधिकार में कार्यरत है। आज जबलपुर मंडल पर सरकारी कामकाज में



से पुरस्कृत किया जाता है। प्रतिमाह विभिन्न स्टेशनों पर आयोजित संरक्षा सेमिनार/संरक्षा शिविर में राजभाषा की जानकारी दी जाती है। मंडल कार्यालय/डीजल शेड - नकज/विद्युत

राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार का अनुपालन भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है। परिणामस्वरूप कुछ मदों में तो अनुपालन लक्ष्य से भी अधिक हो रहा है और शेष मदों में हम लक्ष्य के लगभग नजदीक हैं।

मंडल की राजभाषा गृह पत्रिका 'प्रगतिपथ' का नियमित रूप से त्रैमासिक प्रकाशन किया जाता है जिसमें मंडल की उपलब्धियों सहित रेल के संबंध में जानकारी तथा मनोरंजक लेख/कविता/कहानी व कार्टून आदि प्रकाशित किए जाते हैं। प्रतिवर्ष राजभाषा डायरी का भी प्रकाशन किया जाता है। लगभग सभी नामचीन हिंदी साहित्यकारों की जयंतियां प्रतिवर्ष मनाई जाती हैं। अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा नीति संबंधी जानकारी प्रदान करने हेतु निरंतर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। सरकारी कामकाज अधिकारिक राजभाषा में करने हेतु अधिकारियों/कर्मचारियों को मोटिवेट किया जाता है और साथ ही राजभाषा प्रयोग-प्रसार में आनेवाली कठिनाईयों को दूर करने के उद्देश्य से लगातार टेबल ट्रेनिंग दी जाती है। अधिकारियों/कर्मचारियों के मनोरंजन व राजभाषा संबंधी जानकारी के लिए समय-समय पर राजभाषा प्रश्नमंच एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उन्हें प्रोत्साहन स्वरूप प्रमाण-पत्र व नगद राशि

शेड-नकज एवं अन्य महत्वपूर्ण स्टेशनों व कार्यालयों में विद्वानों की सूक्तियां हिंदी में लिखवाकर बोर्ड के रूप में प्रदर्शित की गई हैं।

केन्द्रीय कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग-प्रसार की समीक्षा करने वाली देश की सर्वोच्च समिति 'संसदीय राजभाषा समिति' ने वर्ष 2006 में जबलपुर मंडल कार्यालय का निरीक्षण किया था जिसमें माननीय सदस्यों ने मंडल की राजभाषा प्रगति पर संतोष व्यक्त किया था। वर्ष 2014 में रेल हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य श्री इरफान खान ने मंडल कार्यालय एवं जबलपुर स्टेशन का राजभाषा प्रगति निरीक्षण किया और उन्होंने भी राजभाषा प्रगति पर खुशी जाहिर की थी।

मंडल कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों का राजभाषा के प्रति लगाव एवं मंडल रेल प्रबंधकों के कुशल मार्गदर्शन के साथ अपर मंडल रेल प्रबंधक/अपर मुराधियों के साकारात्मक सहयोग से मंडल ने राजभाषा के क्षेत्र में कई उल्लेखनीय कार्य किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप अनेक बार पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव भी प्राप्त हुआ है। वर्ष 2014 में डीजल शेड, नई कटनी जंक्शन को रेलमंत्री राजभाषा शील्ड के साथ ₹ 7,000/- का नगद पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। वर्ष 2017 में मंडल कार्यालय को महाप्रबंधक राजभाषा शील्ड, वर्ष 2018 में विद्युत शेड, नई कटनी जंक्शन को रेलमंत्री राजभाषा शील्ड

अनलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की अमूल्य भाषाओं में हिंदी महानतम स्थान रखती है - अमरनाथ झा

के साथ रू 14,000/- का नगद पुरस्कार एवं 2019 में मंडल कार्यालय को नगर राजभाषा समिति कार्यालय क्रं.2 से प्रथम स्थान स्वरूप राजभाषा चल शील्ड का सम्मान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त वर्ष 2017 में मंडल के श्री ज्योति खरे, तकनीशियन को उनके काव्य संग्रह के लिए रेलवे बोर्ड का मैथिली शरण गुप्त प्रथम पुरस्कार एवं श्री शमशाद खान, वरिष्ठ अनुवादक को वर्ष 2018 में रेल यात्रा वृत्तांत 'पगडंडी से पटरी तक' को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्ष 2017 में ही मंडल के स्टेशन प्रबंधक श्री ओमप्रकाश बिंजवे को रेलवे बोर्ड का राजभाषा व्यक्तिगत नगद पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्रतिवर्ष मंडल के 01 अधिकारी एवं 02 कर्मचारियों को राजभाषा के उल्लेखनीय प्रयोग-प्रसार हेतु महाप्रबंधक महोदय द्वारा व्यक्तिगत नगद पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। भारत सरकार द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रमों 'एक भारत श्रेष्ठ भारत', 'संविधान दिवस' तथा प्रति वर्ष 'सर्तकता सप्ताह' का आयोजन मंडल पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार से जोड़कर किया जाता है।

मंडल पर राजभाषा प्रगति की समीक्षा हेतु मंडल कार्यालय सहित 13 उप समितियों का गठन किया गया है जिसकी नियमित तिमाही बैठकें आयोजित कर राजभाषा प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की जाती है। मंडल के विभिन्न कार्यालयों/स्टेशनों पर रेल अधिकारी/कर्मचारी व उनके परिवार के सदस्यों के मनोरंजन हेतु 18 हिंदी पुस्तकालय/

वाचनालय का संचालन किया जा रहा है, जिसके लिए प्रतिवर्ष भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार ज्ञानवर्धक व उपयोगी साहित्य खरीदी जाती है।

राजभाषा विभाग द्वारा महत्वपूर्ण दस्तावेजों व कागजातों जैसे 'कोविड-19 मानक कार्यालय प्रक्रिया' पुस्तिका, 'रेल सुरक्षा बल मैनुअल', विभिन्न निविदा सूचना व प्रपत्र, प्रशस्ति-पत्रों, संरक्षा अभियान तथा विभागीय पत्रिकाओं आदि का अनुवाद तथा राजभाषा में प्रकाशन हेतु सहयोग प्रदान किया गया।

राजभाषा विभाग द्वारा जून, 2018 में राजभाषा कैलेण्डर का प्रकाशन किया गया, जिसमें राजभाषा की संवैधानिक स्थिति, नियम/अधिनियम तथा विभिन्न पुरस्कारों की जानकारी दी गई है। रेलवे बोर्ड के कार्यकारी निदेशक (स्था.) श्री एस.पी.माही ने दिनांक 01.10.2019 को मंडल कार्यालय एवं जबलपुर स्टेशन का राजभाषा प्रगति निरीक्षण किया। उन्होंने राजभाषा प्रयोग-प्रसार पर प्रसन्नता व्यक्त की।

मंडल पर राजभाषा नीतियों के समुचित अनुपालन हेतु भारत सरकार के सद्वाक्य 'प्रेरणा व प्रोत्साहन' के साथ सदैव प्रयास जारी रहेगा।

राज रंजन श्रीवास्तव

राजभाषा अधिकारी, जबलपुर मंडल

राजभाषा - किसी भी देश में सरकारी कामकाज में प्रयोग की जाने वाली भाषा अर्थात् राजकाज की भाषा को राजभाषा कहते हैं। हिंदी भारत की राजभाषा और अंग्रेजी भारत की सह राजभाषा है।

राष्ट्रभाषा - किसी भी देश में अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राष्ट्रभाषा कहते हैं। किसी देश में अनेक धर्म, भाषा, संस्कृति को मानने वाले लोग हो सकते हैं। सबको आपस में जोड़ने का काम राष्ट्रभाषा ही करती है। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। पूरे भारत में आपको हिंदी बोलने और समझने वाले लोग आसानी से मिल जाएंगे।

हिंदी ठमाने देश और भाषा की प्रभावशाली विनायक है - माखनलाल चतुर्वेदी

कोटा मंडल पर राजभाषा के बढ़ते कदम

देश के मानचित्र पर शैक्षणिक एवं औद्योगिक नगरी के रूप में स्थापित कोटा समृद्ध ऐतिहासिक विरासत और स्थापत्य के साथ-साथ पक्षियों एवं वन्यजीवों के लिए भी एक सुरक्षित व संरक्षित आरामगाह है।

दिनांक 01 अप्रैल, 2003 को पश्चिम मध्य रेल के अस्तित्व में आने के साथ कोटा मंडल को मुख्यालय जबलपुर के अधीन रखा गया और इसके साथ ही कोटा मंडल के राजभाषा विभाग ने नवीन प्रतिमान के साथ काम करना शुरू किया।

‘क’ क्षेत्र में स्थित कोटा मंडल के अधिकारी व कर्मचारी हिंदी भाषा का अच्छा ज्ञान रखते हैं, और यहाँ हिंदी में काम-काज करने में सामान्यतः कोई परेशानी नहीं थी किन्तु फिर भी राजभाषा के रूप में हिंदी को मजबूती से अपने पैर जमाने के लिए एक विशेष दृष्टिकोण और योजना अपनाए जाने की जरूरत थी ताकि कर्मचारी संवैधानिक आबद्धता के कारण नहीं अपितु राजभाषा से नैसर्गिक जुड़ाव की भावना से प्रेरित होकर हिंदी में काम-काज करें।

इस विकास यात्रा को इस प्रकार देखा जा सकता है:-

1. तकनीकी सुदृढ़ता : वर्ष 2003 तक कार्यालय में अधिकांश कार्य कंप्यूटरों के माध्यम से होने लगा था। अतः रणनीति के तौर पर सर्वप्रथम कंप्यूटर पर कुंजीयन प्रशिक्षण को प्रथम अग्रता दी गई और प्रत्येक विभाग से 10-10 कर्मचारियों को आउटसोर्सिंग के माध्यम से हिंदी कुंजीयन में प्रशिक्षित करवाया गया, यह सोच इतनी प्रभावकारी रही कि 1,215 कर्मचारियों को विधिवत रूप से प्रशिक्षित करवाने के बाद कंप्यूटरों पर कार्य करने वाले अन्य कर्मचारी निजी प्रयासों से कंप्यूटरों पर सुचारू रूप से हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित हुए। इस अनवरत श्रृंखला में कोटा मंडल के 100 से अधिक कर्मचारी गृहमंत्रालय के (हिंदी शब्द संसाधन



टंकण) पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से भी हिंदी टंकण परीक्षाएँ पास कर चुके हैं एवं सुगमतापूर्वक कार्य कर रहे हैं।

2. राजभाषा एवं रेल कर्मियों के बीच सेतु बंधन : इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए वर्ष 2006 में राजभाषा विभाग, कोटा मंडल के तत्वावधान में अधिकारियों व कर्मचारियों के परिवारजन को राजभाषा के प्रति सुग्राही बनाने के लिए रेल कर्मियों के बच्चों के लिए ऑन-स्पॉट चित्रकला एवं निबंध

प्रतियोगिता रखी गई, इस कार्यक्रम की प्रतिक्रिया और प्रत्युत्तर इतना जबरदस्त रहा कि मंडल कार्यालय कोटा के प्रांगण में एकत्र रेल कर्मियों के बच्चों ने तूलिका और कलम के सहारे देशभक्ति और हिंदी लेखन का संदेश घर-घर पहुंचा दिया।

3. राजभाषा एवं कार्यालयीन सरोकार : इसके बाद कोटा मंडल के स्टेशनों पर स्थित अधीनस्थ कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों को राजभाषा की मुख्यधारा से जोड़ने का मिशन हाथ में लिया गया और राजभाषा अधिकारी एवं राजभाषा कार्मिकों ने स्टेशनों पर चरण बद्ध रूप से हिंदी प्रतियोगिताएं और कार्यशालाएं आयोजित करने की मुहिम शुरू की। हर वर्ष कोटा मंडल स्थित न केवल बड़े स्टेशनों अपितु बूंदी, मांडल गढ़, रामगंज मंडी और भवानी मंडी जैसे सीमित कर्मचारी संख्या वाले स्टेशनों पर भी हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

कार्यशालाओं के लिए कोटा मंडल के राजभाषा अनुभाग द्वारा स्वयं के प्रयासों से रोचक पाठ्य-सामग्री एवं क्विज तैयार की गई जिसमें केवल व्याख्यान न देकर अनन्योक्तिया के माध्यम से कर्मचारियों को कार्यालयीन शब्दावली एवं हिंदी में काम-काज करने का प्रशिक्षण दिया गया। इसमें उच्च अधिकारियों की पहल पर कर्मचारियों को शब्दकोश एवं अन्य उपयोगी सहायक साहित्य

निज भाषा उन्नति अटे, अब उन्नति को मूल - भारतेन्दु हरिश्चंद्र

उपलब्ध करवाया गया। विगत 17 वर्षों में कोटा मंडल पर लगभग 102 हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की जा चुकी हैं और 03 हजार से अधिक कर्मचारी प्रशिक्षित किये जा चुके हैं।

4. हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन : हिंदी प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए अत्यंत मनोवैज्ञानिक सोच के साथ कार्य किया गया और हिंदी सप्ताह या पखवाड़े के दौरान एक साथ प्रतियोगिताएँ आयोजित करने के स्थान पर वर्ष पर्यन्त अलग-अलग स्टेशनों पर कार्यक्रम रखे गए जिनमें स्वरचित काव्यपाठ प्रतियोगिताएँ, साहित्यकारों की जयंतियाँ मनाना, प्रश्नमंच, हिंदी निबंध, टिप्पण एवं आलेखन एवं वाक् प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं के आयोजन में सदैव नए-नए प्रयोग किए गए और इनकी रोचकता बनाए रखने के लिए प्रत्येक स्टेशन और मंडल कार्यालय में इनका स्वरूप अलग-अलग रखा गया।

5. सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ : कोटा मंडल का सौभाग्य रहा है कि यहां पदस्थ उच्च अधिकारियों ने राजभाषा के प्रति गहरी रुचि दिखाई और इसी का परिणाम रहा कि मंडल पर प्रतिवर्ष राजभाषा पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का भव्य आयोजन किया जाता है और इस दौरान मंडल के फाइन आर्ट्स कर्मचारियों द्वारा उत्कृष्ट हिंदी नाटकों की भावपूर्ण प्रस्तुति दी जाती है साथ ही देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति अधिकारियों व कर्मचारियों के मन पर गहरी छाप छोड़ देती है।

कोटा मंडल पर अनवरत रूप से प्रतिवर्ष स्वरचित काव्य-पाठ कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से सृजनशीलता का अनोखा रूप देखने को मिला है। कोटा मंडल पर समय-समय पर हिंदी के नामचीन कवियों को आमंत्रित कर वृहत् स्तर पर काव्य-गोष्ठियाँ भी आयोजित की जाती रही हैं। यहां वर्ष 2012 एवं 2014 में कोटा मंडल पर आयोजित विराट हास्य कवि-सम्मेलन का जिक्र करना समीचीन होगा। इन कवि सम्मेलनों को आमजन एवं मीडिया द्वारा अत्यधिक सराहा गया।

6. राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं का क्रियान्वयन : कोटा मंडल में गृहमंत्रालय एवं रेलवे बोर्ड की समस्त प्रोत्साहन योजनाओं

को लागू किया गया है। फलस्वरूप यहां कार्यरत कर्मचारियों को लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार, प्रेमचंद पुरस्कार, रेल यात्रा वृतांत पुरस्कार जैसे सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। यहां उल्लेखनीय है कि कोटा मंडल के श्री शरद उपाध्याय को 02 बार प्रेमचंद पुरस्कार, रेल यात्रा वृतांत पुरस्कार एवं वर्ष 2011 में साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान देने के लिए श्री अमर सिंह राठौर को महाप्रबंधक पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

7. राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ : मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोटा एवं मंडल स्थित 09 स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों के नियमित रूप से आयोजन एवं अनुवर्ती कार्रवाई के परिणामस्वरूप कोटा मंडल में राजभाषा नीति को लागू करने और प्रगति को मॉनीटर करने की एक सुदृढ़ व्यवस्था कायम की गई है, अब तक मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 68 बैठकों का सफलतापूर्वक आयोजन किया जा चुका है।

8. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति : कोटा मंडल की उपलब्धियों में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोटा का संचालन एवं नेतृत्व करना एक अति महत्वपूर्ण उपलब्धि है, लगभग तीन दशकों से मंरेप्र कार्यालय, कोटा, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोटा की अध्यक्षता करता आ रहा है एवं यह समिति अब तक 60 बैठकों का सफलतापूर्वक आयोजन कर चुकी है।

9. राजभाषा प्रकाशन : कोटा मंडल में राजभाषा दैनन्दिनी एवं गृह पत्रिका चंबलवाणी एवं चंबलप्रसून का अनवरत रूप से प्रकाशन किया जा रहा है। इससे यहां के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को एक ऐसा साझा मंच उपलब्ध है जहाँ वे अपनी सृजनात्मकता प्रतिभा को उभारने के साथ-साथ महत्वपूर्ण एवं उपयोगी जानकारी भी प्राप्त करते हैं। मंडल द्वारा उत्कर्ष, ज्ञान कसौटी एवं शेड दर्पण जैसी बुकलेट्स का भी प्रकाशन किया जाता है।

इसी क्रम में कोटा मंडल द्वारा प्रकाशित किए जा रहे सहायक साहित्य ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है, कोटा मंडल के समस्त स्टेशनों पर राजभाषा नीति की महत्वपूर्ण जानकारी

हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य को अर्वांग मुंदन बनाना ठमारा कर्तव्य है - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

देने वाले आकर्षक पोस्टरस लगवाए गए हैं और प्रत्येक कार्यालय में राजभाषा की जानकारी देने वाले पॉकेट कार्ड्स उपलब्ध करवाए गए हैं।

10. नवीन प्रयोग एवं पहलकदमी : कोटा मंडल राजभाषा अनुभाग के कार्मिकों ने मंडल कार्यालय के प्रत्येक अनुभाग की प्रत्येक फाइल का शीर्षक द्विभाषी रूप में स्वयं लिखकर अनोखा कीर्तिमान स्थापित किया है साथ ही यहां फाइलों की अंतिम जिल्द पर राजभाषा शब्दावली छपवाकर चिपकाई गई हैं ताकि, नोटिंग लिखते समय तुरंत संबंधित शब्द देखकर लिखा जा सके।

कोटा मंडल राजभाषा अनुभाग द्वारा अनुवाद कार्य को अत्यधिक महत्व दिया गया है, फलस्वरूप अत्यंत अल्प समय में कोटा मंडल के सभी स्टेशन संचालन नियमों का हिंदी रूपान्तरण किया गया। निविदा, संविदा एवं ई-टेंडरिंग संबंधी और अनुशासनिक कार्रवाई, विभागीय परीक्षाओं इत्यादि संबंधी अतिगोपनीय एवं महत्वपूर्ण सामग्री का अनुवाद विभाग द्वारा नियमित रूप से किया जाता है। मंडल की वेबसाइट के द्विभाषीकरण का कार्य भी विभाग द्वारा किया गया है।

कोटा मंडल पर व्यक्तिगत संपर्क एवं टेबल ट्रेनिंग को प्राथमिकता दी गई है ताकि, कर्मचारियों का अतिरिक्त समय लिए बिना मौके पर ही व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जा सके, कोटा मंडल के राजभाषा अनुभाग की इस पहल को कार्यालय में सर्वत्र सराहा गया है।

11. हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय : कोटा मंडल के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजन में पठन-पाठन के प्रति गहरी रूचि को देखते हुए वर्ष 2015 में मंडल कार्यालय में स्थित रवीन्द्रनाथ टैगोर हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय को नवीन परिसर में शिफ्ट कर इसका लोकार्पण किया गया। अब पुस्तकालय पूर्णतः कंप्यूटरीकृत भी किया जा चुका है।

12. निरीक्षण : महाप्रबंधक महोदय एवं उच्च अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से किए जा रहे निरीक्षणों के अतिरिक्त दिनांक 20.09.2006 को संसदीय समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा एवं

दिनांक 28.12.2011 को रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की माननीय सदस्या द्वारा कोटा मंडल का निरीक्षण किया गया एवं मंडल पर राजभाषा प्रगति पर संतोष प्रकट किया गया।

13. राजभाषा प्रदर्शनी : कोटा में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले राष्ट्रीय दशहरा मेला के अवसर पर रेलवे की ओर से लगाई जाने वाली स्टॉल पर हिंदी पत्रिकाओं, पोस्टरों, आमजन को हिंदी में दिए जाने वाले संरक्षा संदेश, पेम्फलेट्स इत्यादि प्रदर्शित किये जाते हैं एवं इन्हें जनता द्वारा काफी पसंद किया जाता है। वर्ष 2009 में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के तत्वावधान में कोटा मंडल के दिगोद में रेलवे द्वारा लगाई गयी स्टॉल पर रेलवे द्वारा जनसाधारण को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं, मानव रहित समपार फाटक पार करने में बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में राजभाषा में कैलेंडर व पेम्फलेट्स वितरित किये गए।

14. पुरस्कार एवं सम्मान : कोटा मंडल की इन समस्त उपलब्धियों के लिए मंडल को वर्ष 2010 में 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी' चल शील्ड एवं वर्ष 2015 में टीकेडी, विद्युत शेड को आदर्श कारखाना रेल मंत्री राजभाषा शील्ड सहित वर्ष 2009, 2012, 2014 एवं 2018 में महाप्रबंधक राजभाषा दक्षता शील्ड से नवाजा जा चुका है। कोटा मंडल पर वर्ष 2018 में तत्कालीन अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री पी.के.बी. मेश्राम महोदय को राजभाषा रजत पदक एवं रु. 8000/- का नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

15. आगामी पहल : कोटा मंडल पर राजभाषा का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है, हमें कार्य निष्पादन की गति बनाए रखने के लिए तकनीकी सशक्तिकरण पर अत्यधिक बल देने की आवश्यकता है। हमें अपनी कार्य-प्रणाली को अधिक समावेशी बनाते हुए राजभाषा ई-टूल्स को अपने दैनिक कार्यों में सम्मिलित करना होगा और ई-पत्रिका एवं पेपर रहित कार्य प्रणाली के क्षेत्र में उपलब्ध संभावनाओं के अनुरूप स्वयं को ढालना होगा।

कोटा मंडल इस दिशा में निरंतर अग्रसर है।

अर्चना श्रीवास्तव

वरिष्ठ अनुवादक, कोटा मंडल

अनंस्कृत माँ, हिंदी गृहणी और अंग्रेजी नौकनानी है - डॉ. फादर कामिल बुल्के

कोटा कारखाने में प्रगति पथ पर अग्रसर राजभाषा

भारतीय रेलों के इतिहास में माल डिब्बा मरम्मत कारखाना, कोटा का अति महत्वपूर्ण स्थान है। इस कारखाने का अतीत गौरवशाली तथा वर्तमान बहुत समृद्धशाली है। यह कारखाना अपने स्थापना काल से ही उन्नत अनुरक्षण पद्धतियों के साथ-साथ अन्य मानवीय सरोकारों के प्रति भी सजग रहकर अपने सामाजिक एवं समसामयिक दायित्वों को बखूबी निभाता रहा है।

कारखाने का नेतृत्व हमेशा कुशल एवं दक्ष हाथों में रहने के कारण नित नवीन तकनीकी आयामों को स्पर्श करने तथा आधुनिक उच्च प्रौद्योगिकी को वैगन रिपेयर में आत्मसात् करने के साथ-साथ कारखाने का राजभाषा अनुभाग राजभाषा के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में उच्च कीर्तिमान स्थापित करता रहा है। कारखाने का राजभाषा अनुभाग राजभाषा के प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा के कार्यान्वयन को मूर्त एवं व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए सदैव प्रयासरत रहा है। कारखाने ने गुणवत्ता के साथ-साथ राजभाषा के सतत विकास की अपनी परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखते हुए अखिल भारतीय रेल स्तर, क्षेत्रीय स्तर, नगर राजभाषा कार्यान्वयन स्तर तथा अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। कोटा माल डिब्बा मरम्मत कारखाना के गत वर्षों के राजभाषा के सतत शानदार सफर की कुछ उपलब्धियाँ रेखांकित की जा रही हैं-

1. तकनीकी साहित्य लेखन में रेलवे बोर्ड पुरस्कार :

कारखाना का राजभाषा अनुभाग सृजन के तकनीकी क्षेत्र में भी उपलब्धियाँ हासिल करता रहा है। अप्रैल-1999 में “वैगन मेंटीनेंस टेक्नालॉजी” पर हिंदी में पुस्तक लिखने पर कारखाने के सहायक निर्माण प्रबंधक श्री रघुराज सिंह कर्मयोगी को रेलमंत्री द्वारा “लालबहादुर शास्त्री तकनीकी पुस्तक लेखन पुरस्कार” से



सम्मानित किया गया। श्री योगी ने 11 फरवरी 2014 को कहानी संग्रह “आज का एकलव्य” पर मुंशी प्रेमचन्द पुरस्कार प्राप्त किया। आज का एकलव्य रेलवे बोर्ड की मासिक पत्रिका रेल राजभाषा में सर्वश्रेष्ठ कहानी घोषित की गई।

2. रेल यात्रा वृत्तांत पर रेलवे बोर्ड पुरस्कार :

कारखाने में पदस्थ श्री शमशाद खान,

वरिष्ठ अनुवादक को 22 फरवरी-2018 को उनके द्वारा लिखित रेल यात्रा वृत्तांत “पगडंडी से पटरी तक” के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा रु. 6000/- का नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

3. अखिल भारतीय अंतर रेल प्रश्न-मंच प्रतियोगिता :

वर्ष-2018 से प्रारम्भ की गई अखिल भारतीय अंतर रेल प्रश्न-मंच प्रतियोगिता में कारखाने में पदस्थ उप मु.याँ.इंजी.(आर) श्री प्रज्ञेश निंबालकर ने प.म.रेल का प्रतिनिधित्व किया। दिनांक 05/03/2020 को बेंगलूर में आयोजित इस प्रतियोगिता में विभिन्न रेलों, उत्पादन इकाइयों, अनु.अभि.एवं मा.सं. तथा रेलवे की अन्य यूनिटों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इसमें पश्चिम मध्य रेल की टीम के नेतृत्वकर्ता श्री पी.निंबालकर को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया। वर्ष 2018 में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए श्री निंबालकर ने महाप्रबन्धक पुरस्कार प्राप्त किया।

4. अखिल रेल राजभाषा प्रतियोगिताओं में कारखाने की सक्रिय भागीदारी :

इन प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत रेलवे बोर्ड तथा मुख्यालय के निर्देशानुसार निबंध लेखन प्रतियोगिता, टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता तथा वाक प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। कारखाने के अधिकारी/कर्मचारी इनमें बड़े मनोयोग से

हिंदी संस्कृत की बेटियों में अबने अच्छी और शिरोमणि है - ग्रियर्सन

भाग लेते हैं। वर्ष-2005 में दिनांक 04/02/2005 को कारखाना के कार्यालय अधीक्षक श्री आर.एस.खण्डेलवाल ने दक्षिण रेलवे के क्षेत्रीय प्रशिक्षण स्कूल, त्रिची में आयोजित अखिल रेल हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में कारखाने का प्रतिनिधित्व किया।

5. हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु रेलवे बोर्ड पुरस्कार : सरकारी काम-काज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना के तहत कारखाने के श्री टी.के.दास, मुख्य कार्यालय अधीक्षक, स्थापना अनुभाग-2 को दिनांक 16/12/2019 को रेलवे बोर्ड द्वारा पुरस्कृत किया गया। आपको बोर्ड द्वारा रु. 3000/- पुरस्कार राशि तथा महाप्रबंधक महोदय द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

6. मुख्यालय द्वारा प्रदत्त शील्ड/पुरस्कार/ट्रॉफी : राजभाषा के प्रचार-प्रसार तथा कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए कारखाने को वर्ष-2007, 2008, 2011, 2012, 2013, 2015, 2016 एवं 2019 में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु मुख्यालय द्वारा 'अंतर कारखाना राजभाषा शील्ड' से सम्मानित किया गया।

महाप्रबंधक व्यक्तिगत नगद पुरस्कार योजना के तहत प्रतिवर्ष कारखाने 01 अधिकारी तथा 02 कर्मचारियों को सरकारी काम-काज में हिंदी के अधिकाधिक एवं उत्कृष्ट प्रयोग करने के लिए पुरस्कृत किया जाता है। वर्ष-2019 में भी कारखाने के 01 अधिकारी तथा 02 कर्मचारियों को महाप्रबंधक महोदय के कर कमलों द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया। रेलवे बोर्ड द्वारा निर्देशित "एक भारत श्रेष्ठ भारत विषय" पर कारखाने में निबंध लेखन, वाक् तथा काव्य पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दिनांक 28/06/2017 को इसके तहत निबंध लेखन के लिए कारखाने के श्री महेश कुमार को मुख्यालय द्वारा तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

7. कारखाने में तकनीकी एवं कर्मचारी कल्याणकारी साहित्य का सृजन : तकनीकी साहित्य लेखन के साथ-साथ कारखाना कर्मचारी कल्याण संबंधी साहित्य के प्रकाशन को भी महत्व देता रहा है। बीटीपीजीएलएन वैगनों का अनुरक्षण एवं परीक्षण तथा एलपीजी टैंक वैगन अनुरक्षण पुस्तिकाएं हिंदी में तैयार

की गईं। ये पुस्तिकाएं महाप्रबंधक महोदय के कारखाना भ्रमण के अवसरों पर तैयार की गईं।

8. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति संबंधी गतिविधियां एवं शील्ड/पुरस्कारों की प्राप्ति : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोटा द्वारा आयोजित सभी बैठकों में कारखाने के मुख्य कारखाना प्रबंधक महोदय सक्रियता से भाग लेते हैं तथा नराकास द्वारा आयोजित सभी प्रतियोगिताओं में कारखाने का प्रतिनिधित्व रहता है। दिनांक 26/12/2019 को नराकास की प्रतियोगिताओं में कारखाने के 05 कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुए। वर्ष-2018 में कारखाने को चल वैजयंती राजभाषा शील्ड प्रदान की गई है।

9. अखिल रेल नाट्योत्सव द्वारा हिंदी का प्रचार-प्रसार : पश्चिम मध्य रेल के गठन के बाद कारखाना हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए रंगमंच पर भी अपनी पहचान कराता आया है। मुख्यालय में आयोजित अखिल रेल नाट्योत्सव प्रतियोगिता- 2005 के अवसर पर कारखाना के 16 कर्मचारियों द्वारा "घुस पैठिये" नामक नाटक का मंचन किया गया। 2006 में भी अखिल रेल नाट्योत्सव के अवसर पर कारखाने के कर्मचारियों ने "जामुन का पेड़" नामक नाटक का मंचन किया तथा महाप्रबंधक महोदय से पुरस्कार प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त कारखाने की सांस्कृतिक अकादमी द्वारा विभिन्न अवसरों पर नाटकों का मंचन किया जाता है।

10. हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस का आयोजन : कारखाना में राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर निबंध लेखन, वाक् तथा टिप्पण-आलेखन, प्रश्न-मंच आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। कारखाना के कर्मचारी इन प्रतियोगिताओं में बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं। कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति लगाव तथा प्रतिस्पर्धा देखते ही बनती है।

11. तकनीकी/गैर तकनीकी कार्यशालाओं का आयोजन : कारखाना के कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाईयों एवं समस्याओं को दूर करने के लिए हिंदी कार्यशालाओं का अनवरत आयोजन किया जाता है। दिनांक 10/02/2020 को कारखाना में जैव विविधता पर तकनीकी कार्यशाला तथा दिनांक 12/02/2020 से 13/02/2020 तक

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ परंतु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सहन नहीं कर सकता - आचार्य विनोबा भावे

राजभाषा कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। कारखाने के राजभाषा अनुभाग द्वारा स्वयं एवं निजी प्रयासों से ज्ञानवर्धक, रोचक पाठ्य सामग्री तैयार कर तकनीकी तथा गैर तकनीकी राजभाषा की कार्यशालाएं चलाई जाती हैं। साथ ही बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र में प्रोन्नति पूर्व राजभाषा प्रशिक्षण की कक्षाएं भी आयोजित की जाती हैं।

12. पत्रिका एवं दैनंदिनी का प्रकाशन : कारखाना की गृह पत्रिका प्रयास तथा दैनंदिनी का अविरल रूप से प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका कारखाना का एक ऐसा मंच है जहाँ से अधिकारी एवं कर्मचारी अपने ज्ञान, अनुभव तथा कलाओं को दूसरों के साथ साझा करते हैं। दैनंदिनी कोटा कारखाना द्वारा प्रकाशित एक ऐसा दस्तावेज है जो भारत सरकार की राजभाषा नीति, सामान्यतः कार्यालयों में उपयोग की जाने वाली हिंदी/अंग्रेजी टिप्पणियों, प्रशासनिक शब्दावली, गोपनीय रिपोर्ट शब्दावली, राजभाषा निरीक्षण चेक लिस्ट आदि से पाठकों को रूबरू कराता है।

13. पुस्तकालय तथा वाचनालय : कारखाना में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के ज्ञान-वर्धन, मनोरंजन तथा साहित्य के पठन-पाठन के लिए “मैथिलीशरण गुप्त” हिंदी पुस्तकालय संचालित किया जा रहा है। इस पुस्तकालय में भारत के लब्ध प्रतिष्ठित हिंदी साहित्यकारों की पुस्तकें तथा उत्कृष्ट अनूदित साहित्य उपलब्ध है। अधिकारी एवं कर्मचारी पुस्तकालय का लाभ उठाते हैं।

14. तकनीकी आत्मनिर्भरता : कारखाना को राजभाषा के प्रयोग में जमीनी धरातल पर आत्मनिर्भर बनाने के लिए कारखाना में उपलब्ध सभी 153 कम्प्यूटरों पर हिंदी फॉन्ट/गूगल हिंदी इनपुट व्यवस्था उपलब्ध कराई गई है। इससे हिंदी टंकण न जानने वाले कर्मचारी भी सुगमता से हिंदी में टंकण कर कार्यालयीन कार्य कर सकते हैं। कारखाने के अनेक कर्मचारियों ने निजी प्रयासों से भी हिंदी टंकण प्रशिक्षण प्राप्त किया है। गृह मंत्रालय से (हिंदी शब्द संसाधन टंकण) पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से हिंदी टंकण परीक्षाएं उत्तीर्ण कर प्रोन्नति प्राप्त की है तथा सुगमता पूर्वक कार्यालय में हिंदी टंकण कार्य कर रहे हैं। टंकण प्रशिक्षण का यह सिलसिला लगातार जारी है।

15. प्रशासनिक एवं कार्यालयीन शब्दावली में एक रूपता

लाने का प्रयास : कार्यालयों में उपयोग की जाने वाली प्रशासनिक एवं कार्यालयीन शब्दावली में एक रूपता लाने के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड द्वारा जारी 111 (एक सौ ग्यारह) शब्दों की सूची समय – समय पर टंकित करवाकर राजभाषा बैठकों तथा अन्य अवसरों पर पर्यवेक्षकों/अधिकारियों को वितरित की जाती है। कारखाने के बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र में तकनीकी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूर्णतः हिंदी में तैयार किया गया है तथा कर्मचारियों को अनुदेशकगण हिंदी में ही तकनीकी प्रशिक्षण देते हैं।

16. कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति : कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की समीक्षा बैठकें समय पर आयोजित की जाती हैं तथा बैठकों की कार्य सूची तथा कार्यवृत्त हिंदी में जारी किये जाते हैं। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कवि सम्मेलनों का आयोजन तथा साहित्यिक रचनाओं का वाचन भी किया जाता है।

17. राजभाषा के विकास के लिए किए गए अभिनव प्रयोग : वार्षिक बुकलेट का हिंदी अनुवाद, आवास समिति के बायलॉज, कोविड-19 की रोकथाम एवं इसके बचाव संबंधी रेलवे बोर्ड, मुख्यालय से जारी नियम एवं निर्देशों का हिंदी अनुवाद, धारा 3/3 का अनुपालन इत्यादि के अतिरिक्त कारखाना में राजभाषा के अभिनव प्रयोग हेतु नित नए प्रयास किये जाते हैं। हिंदी में कार्य करने में वृद्धि करने के लिए व्यक्तिगत संपर्क, अनुभागों में फाइलों पर द्विभाषी विवरण, टेबिल-ट्रेनिंग, प्रशासनिक एवं कार्यालयीन शब्दावली का वितरण किया जाता है।

कारखाना में मुख्य कारखाना प्रबन्धक महोदय की पहल पर कारखाना के अधिकारियों एवं पर्यवेक्षकों का राजभाषा प्रसार समिति नाम से एक समूह बनाया गया है जिस पर प्रतिदिन एक सुविचार तथा एक अंग्रेजी शब्द तथा उसका हिंदी अर्थ दिया जाता है। इससे समूह के सदस्यों की हिंदी अंग्रेजी शब्दावली में अभिवृद्धि हुई है। इस कार्य की सबने सराहना की है।

इस प्रकार मडिमका में तकनीकी कार्य के साथ-साथ राजभाषा का प्रगति-पथ पर अग्रसर होता शानदार सफर अनवरत रूप से जारी है।

शमशाद खान

वरिष्ठ अनुवादक, कोटा कारखाना

अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मभ्रात करने की जो विलक्षण क्षमता हिंदी में है, किसी और भाषा में नहीं - अज्ञात

राजभाषा हिंदी के समग्र विकास में समर्पित सवारी डिब्बा पुनर्निर्माण कारखाना, भोपाल

भारत वर्ष का हृदय मध्य प्रदेश और उसकी राजधानी झीलों की नगरी भोपाल यह शहर अपनी समृद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत के लिए देश ही नहीं वरन् दुनिया भर में जाना जाता है। राजा भोज द्वारा स्थापित इस शहर में मुस्लिम शासकों ने भी लम्बे समय तक शासन किया इसलिए इसे नवाबों का शहर भी कहते हैं। यहां कई ऐसे संस्थान हैं जहां देश भर के लोग विविध भाषाओं और सांस्कृतियों को समेटे हैं। कुल मिलाकर भोपाल समूचे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है यहाँ की मिली-जुली संस्कृति सांझी विरासत सचमुच सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा की सच्ची अभिव्यक्ति है।

भोपाल मध्यप्रदेश राज्य की राजधानी ही नहीं है अपितु शिक्षा के बड़े केन्द्र के रूप में भी देश भर में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ शिक्षा के अनेक राष्ट्रीय स्तर के केन्द्र हैं, यहाँ अनेक विश्वविद्यालय जैसे: राजीव गाँधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्व विद्यालय, माखल लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गाँधी चिकित्सा महाविद्यालय, संस्कृत राष्ट्रीय संस्थानम्, राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

भोपाल में साहित्य, नाटक, संगीत एवं चित्रकला के भी बड़े विश्वस्तरीय महत्वपूर्ण केन्द्र हैं जिनमें भारत भवन, सांस्कृतिक भवन, रविन्द्र भवन, गाँधी भवन, पं. रविशंकर शुक्ल हिंदी भवन, शहीद भवन के नाम उल्लेखनीय हैं। भोपाल के निकट बौद्ध स्तूप, साँची व भीम बैठका यूनेस्को द्वारा संरक्षित विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित देखने योग्य महत्वपूर्ण स्थान हैं। भोपाल हिंदी साहित्य के महान रचनाकारों की कर्मस्थली, जन्मस्थली भी रहा है। यहाँ दुष्यंत कुमार जैसे महान गजलकार हुये हैं, वहीं फिल्मों में गीत लिखने वाले कैफ भोपाली, असद भोपाली जैसे शायरों को कौन भूल सकता है। वहीं कहानीकार पद्मश्री मालती जोशी व पद्मश्री मेहरूनिसा परवेज ने भोपाल को एक नयी पहचान दी है। पद्मश्री बशीर बद्र की गजलें और उनके शेर बच्चों-बच्चों की जुबान पर रते हुये हैं। यहाँ साहित्यकारों का बहुत सम्मान



किया जाता है, तभी तो व्यंगकार श्री शरद जोशी के नाम पर सड़क मार्ग, दुष्यंत कुमार मार्ग, राजेन्द्र अनुरागी मार्ग, बाल साहित्यकार भीष्म सिंह चौहान मार्ग, महादेवी वर्मा कक्ष, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला नगर बसा हुआ है।

इसी भोपाल नगर में पश्चिम मध्य रेल, भोपाल मंडल स्थित सवारी डिब्बा पुनर्निर्माण कारखाना स्थापित है। इस कारखाने द्वारा निर्मित पहला कोच दिनांक 31.07.1989 को

तत्कालीन केन्द्रीय रेल राज्य मंत्री श्री माधवराव सिंधिया ने राष्ट्र को समर्पित किया था। कारखाने का राजभाषा विभाग राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन करता रहा है।

वर्ष 2003 से वर्तमान तक की सड़पुका, राजभाषा अनुभाग, भोपाल की गतिविधियां एवं उपलब्धियां बिन्दुवार इस प्रकार है :-

1. हिंदी कार्याशालाओं एवं तकनीकी संगोष्ठियों का आयोजन - कारखाना में प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। अब तक 29 हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिनमें कुल 627 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। साथ ही समय-समय पर आयोजित तकनीकी संगोष्ठियों में भी राजभाषा विभाग की सहभागिता होती है। संगोष्ठियों के बैनर, पोस्टर, स्टीकर आदि राजभाषा हिंदी में छपवाए जाते हैं। आमंत्रित व्याख्यानदाताओं द्वारा व्याख्यान हिंदी में ही दिए जाते हैं।

2. कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति - कारखाना में राजभाषा तिमाही समीक्षा बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है। अब तक कुल 66 समीक्षा बैठकों को सफलतापूर्वक आयोजन किया जा चुका है।

3. राजभाषा प्रकाशन - कारखाना से गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है। अब तक कुल 35 अंकों का सफलता पूर्वक प्रकाशन किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने की दृष्टि से राजभाषा नीति पोस्टर, राजभाषा निर्देशिका (पॉकेट कार्ड), राजभाषा स्टीकर आदि का प्रकाशन भी किया जाता है।

4. राजभाषा दैनंदिनी (डायरी) का प्रकाशन- प्रति वर्ष नववर्ष के उपलक्ष्य में “राजभाषा दैनंदिनी” का प्रकाशन अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि पैदा करने का एक सशक्त माध्यम है। इसमें भारत संघ की राजभाषा नीति, राजभाषा नियम, अधिनियम, वार्षिक कैलेंडर, प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक टिप्पणियाँ, लेटिन शब्दावली, प्लानर, राजभाषा चेक लिस्ट आदि का प्रकाशन किया जाता है। जो कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होती है। विगत पांच वर्षों से अनवरत राजभाषा दैनंदिनी का प्रकाशन किया जा रहा है।

5. हिंदी दिवस/राजभाषा सप्ताह का आयोजन - गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग और रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार कारखाना में प्रत्येक वर्ष राजभाषा सप्ताह का आयोजन किया जाता है जिसके अंतर्गत राजभाषा विचार गोष्ठी, स्वरचित काव्यपाठ प्रतियोगिता अधिकारी/कर्मचारी वर्ग के लिये पृथक-पृथक निबंध/टिप्पण व आलेखन/वाक् प्रतियोगिता/प्रश्न मंच प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है। राजभाषा सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर उक्त प्रतियोगिता के विजेता अधिकारी एवं कर्मचारी को एवं वर्ष भर हिंदी का सर्वाधिक एवं सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम (नाटक मंचन/गीत/गजल संध्या) अथवा कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया जाता है। जिसमें बड़ी संख्या में अधिकारी, पर्यवेक्षक एवं कर्मचारी बड़े उत्साह से भाग लेते हैं।

6. अन्य कार्यक्रमों में राजभाषा विभाग की सहभागिता - रेलवे बोर्ड एवं मुख्यालय के निर्देशानुसार कारखाना में कौमी एकता/सतर्कता सप्ताह/उत्पादकता सप्ताह/सुरक्षा सप्ताह/ऊर्जा संरक्षण सप्ताह आदि का आयोजन राजभाषा विभाग की सहभागिता किया जाता है। जिनमें राजभाषा विभाग द्वारा निबंध प्रतियोगिता, वाक् प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों में कर्मचारियों की उत्सुकता देखते ही बनती है।

7. रेलवे बोर्ड एवं मुख्यालय स्तर पर पुरस्कार - राजभाषा विभाग के सक्रिय एवं सुचारू रूप से कार्य करने के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत पुरस्कार योजना के अंतर्गत वर्ष 2004 में कारखाने के श्री सी.आर. अंत्रीवाले, सीनियर सेक्शन इंजी., वर्ष 2007 में श्री मोहम्मद सलीम, कार्यालय अधीक्षक, वर्ष 2015 में श्री रमेश देवतले, अवर लिपिक को प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया है। इसी प्रकार वर्ष 2016 में कारखाना के श्री संत कुमार मालवीय, वरि.तकनीशियन ने रेलवे बोर्ड की ‘मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना’

के अंतर्गत अपने काव्य संग्रह ‘बची हुई खुशियाँ’ के लिए द्वितीय पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र एवं 10,000 रुपये की राशि प्राप्त की। इसके अलावा आपने वर्ष 2016 में अखिल रेल हिंदी निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र एवं 5,000 रुपये की राशि प्राप्त कर कारखाना का गौरव बढ़ाया है।

इसके अलावा प्रतिवर्ष मुख्यालय स्तर पर वर्ष पर्यंत हिंदी का सर्वाधिक एवं सराहनीय कार्य करने वाले एक अधिकारी व दो कर्मचारियों को महाप्रबंधक महोदय द्वारा पुरस्कृत किया जाता है।

8. अंतर कारखाना राजभाषा शील्ड - राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए कारखाना को वर्ष 2005-06, 2007-08, 2009-10, एवं 2014-15 में महाप्रबंधक महोदय, पश्चिम मध्य रेलवे द्वारा ‘अंतर कारखाना राजभाषा शील्ड’ से सम्मानित किया गया।

9. एक भारत, श्रेष्ठ भारत प्रतियोगिता का आयोजन - रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार कारखाना में भी एक भारत श्रेष्ठ भारत प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रथम दौर की हिंदी निबंध लेखन, हिंदी वाक् एवं काव्यपाठ प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया गया। जिसमें कर्मचारियों का प्रदर्शन बेहद अच्छा रहा।

10. हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय - कारखाना के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति गहरी रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से ‘अमृता प्रीतम’ हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय संचालित है। जिसमें लगभग 15-20 पाठक कर्मचारी नियमित रूप से आते हैं। कुल पाठक सदस्यों की संख्या लगभग 175 है। पुस्तकालय में कुल 532 पुस्तकें हैं। वर्ष में सर्वाधिक पुस्तकें पढ़ने वाले अधिकारी/कर्मचारी को ‘सर्वश्रेष्ठ पाठक पुरस्कार योजना’ के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरस्कार राशि से सम्मानित किया जाता है।

11. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भोपाल द्वारा आयोजित छःमाही बैठकों में कारखाने की सक्रिय भागीदारी होती है। नराकास की पत्रिका में प्रकाशन हेतु लेख/कविता आदि भेजे जाते हैं तथा राजभाषा प्रगति रिपोर्ट समय पर प्रेषित की जाती है।

इस प्रकार सवारी डिब्बा पुनर्निर्माण कारखाना, निशातपुरा, भोपाल राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार एवं संघ की राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन में निरंतर प्रगतिपथ की ओर अग्रसर है।

बृजेन्द्र कुमार

वरि.अनुवादक/भोपाल कारखाना

छायाचित्र - वीथिका



राजभाषा पखवाड़ा - 2004 के अवसर पर तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री दीपक कुमार गुप्ता प्रसिद्ध ओडिसी नृत्यांगना सुश्री अनीता बाबू का स्वागत करते हुए।



दिनांक 30.03.2005 को श्री दीपक कुमार गुप्ता, तत्कालीन महाप्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में स्वागत भाषण देते हुए श्री मनोज पाण्डे, तत्कालीन मुराधि।



18 सितम्बर 2006 को आयोजित संसदीय राजभाषा समिति की बैठक में समिति के माननीय संयोजक डॉ. लक्ष्मी नारायण पाण्डेय का स्वागत करते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक श्री महीप कपूर।



दिनांक 18.09.2006 को आयोजित संसदीय राजभाषा समिति की बैठक में तत्कालीन महाप्रबंधक श्री महीप कपूर तथा पमरे के विभाग प्रमुख।



दिनांक 22.03.2006 को आयोजित क्षेत्राकास की बैठक में तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री महीप कपूर तथा तत्कालीन मुराधि, श्री विजय नारायण त्रिपाठी एवं श्री आर. एन. सुनकर, उप मुराधि।



18 जुलाई 2007 को आयोजित क्षेत्राकास की बैठक में तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री महीप कपूर तथा अन्य।

छायाचित्र - वीथिका



24 मार्च 2008 को आयोजित क्षेत्राकास की बैठक में तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री महीप कपूर तथा अन्य अधिकारीगण।



30 मई 2008 को तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री वी. के. मांगलिक की अध्यक्षता में आयोजित क्षेत्राकास बैठक में स्वागत भाषण देते हुए श्री विजय नारायण त्रिपाठी, तत्कालीन मुराधि।



राजभाषा पखवाड़ा - 2008 के अवसर पर संबोधन देते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री वी.के. मांगलिक।



राजभाषा पखवाड़ा 2009 के अवसर पर मंचासीन श्री वी.के. मांगलिक, तत्कालीन महाप्रबंधक, डॉ. प्रमोद बनकर, तत्कालीन मुराधि एवं श्री दीपक कुमार गुप्ता, तत्कालीन उप मुराधि।



क्षेत्राकास की दिनांक 26 अगस्त 2010 को आयोजित बैठक में तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री वी.के. मांगलिक तथा अन्य अधिकारीगण।



01 अगस्त 2010 को आयोजित मुंशी प्रेमचंद जयंती एवं मो. रफी संगीत संध्या के अवसर पर संबोधन देते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री वी. के. मांगलिक।

छायाचित्र - वीथिका



19 सितम्बर 2011 को आयोजित बैठक में तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री गोविंद नारायण अस्थाना तथा अन्य अधिकारीगण।



राजभाषा पखवाड़ा 2011 के अवसर पर संबोधन देते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री जी.एन. अस्थाना।



राजभाषा पखवाड़ा- 2012 के अवसर पर मंचासीन श्री सुनील वी. आर्या, तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री आलोक दवे, तत्कालीन प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर तथा श्री बी.एन. मीना, तत्कालीन मुराधि।



क्षेत्राकास की 26 सितम्बर 2012 को आयोजित बैठक में संबोधन देते हुए श्री सुनील वी. आर्या, तत्कालीन महाप्रबंधक तथा उपस्थित अन्य अधिकारीगण।



07 फरवरी 2013 को आयोजित संसदीय राजभाषा समिति की बैठक में तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री सुनील वी. आर्या तथा पमरे के विभाग प्रमुख।



07 फरवरी 2013 को आयोजित संसदीय राजभाषा समिति के माननीय सदस्यों के साथ तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री सुनील वी. आर्या और पमरे के विभाग प्रमुख।

छायाचित्र - वीथिका



29 सितंबर 2013 को आयोजित राजभाषा पखवाड़ा समारोह में तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री सुनील वी. आर्या का स्वागत करते हुए तत्कालीन मुराधि, श्री एस. पी. त्रिवेदी।



आलेख एवं साक्ष्य उप समिति के माननीय सदस्य का स्वागत करते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री सुनील वी. आर्या।



संसदीय राजभाषा समिति - आलेख एवं साक्ष्य उप समिति की बैठक में तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री सुनील वी. आर्या तथा केन्द्रीय कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधान।



क्षेराकास की बैठक में गृह पत्रिका राजभाषा सरिता का विमोचन करते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री रमेश चंद्रा।



राजभाषा पखवाड़ा - 2015 के अवसर पर संबोधन देते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री रमेश चंद्रा।



क्षेराकास की बैठक में तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री रमेश चंद्रा तथा तत्कालीन अपर महाप्रबंधक एवं तत्कालीन मुराधि।

छायाचित्र - वीथिका



नगर राजभाषा कार्यान्वय समिति की बैठक में समिति के अध्यक्ष, श्री गिरीश पिल्लई, तत्कालीन महाप्रबंधक का स्वागत करते हुए श्री ओ.पी. सिंह, तत्कालीन मुराधि।



नराकास के सदस्य कार्यालयों को संबोधित करते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री गिरीश पिल्लई।



क्षेराकास की बैठक को संबोधित करते हुए श्री गिरीश पिल्लई, तत्कालीन महाप्रबंधक।



नराकास की बैठक में तत्कालीन महाप्रबंधक, तत्कालीन अपर महाप्रबंधक, तत्कालीन मुराधि तथा अन्य अधिकारीगण।



क्षेराकास की बैठक में गृह पत्रिका राजभाषा सरिता का विमोचन करते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री अजय विजयवर्गीय तथा विभाग प्रमुख



वर्ष 2018-19 में विद्युत लोको शेड, कटनी को प्राप्त रेल मंत्री राजभाषा शील्ड तथा मुख्यालय को प्राप्त रेल मंत्री राजभाषा ट्राफी के साथ तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री अजय विजयवर्गीय तथा विभाग प्रमुख।

छायाचित्र - वीथिका



राजभाषा पखवाड़ा - 2019 के अवसर पर तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री अजय विजयवर्गीय का स्वागत करती हुई तत्कालीन मुराधि, श्रीमती वंदना गर्ग।



राजभाषा पखवाड़ा - 2019 के अवसर पर संबोधन देते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री अजय विजयवर्गीय।



क्षेत्राकास की 48 वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए अपर महाप्रबंधक, श्री शोभन चौधुरी



क्षेत्राकास की बैठक में राजभाषा सरिता का विमोचन करते हुए श्री शोभन चौधुरी, अपर महाप्रबंधक एवं अन्य विभाग प्रमुख



श्री राजेश अर्गल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) को रेलमंत्री राजभाषा रजत पदक एवं प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक श्री शोभन चौधुरी।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में जबलपुर मंडल को हिंदी के सराहनीय प्रयोग के लिए प्रथम पुरस्कार (राजभाषा चल शिल्ड) प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक, श्री शोभन चौधुरी।

छायाचित्र - वीथिका



भारतीय जीवन बीमा निगम को द्वितीय पुरस्कार प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक, श्री शोभन चौधुरी एवं तत्कालीन मुराधि, श्रीमती वंदना गर्ग।



क्षेत्रीय आयुक्त, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन को तृतीय पुरस्कार प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक, श्री शोभन चौधुरी एवं तत्कालीन मुराधि, श्रीमती वंदना गर्ग



क्षेराकास की 49 वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए महाप्रबंधक, श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह।



मुख्यालय की गृह पत्रिका राजभाषा सरिता का विमोचन करते हुए महाप्रबंधक, श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह एवं विभाग प्रमुख।



क्षेराकास की 49 वीं बैठक में उपस्थित सदस्यगण।

छायाचित्र - वीथिका



74 वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर झंडा वंदन एवं राष्ट्रगान।



सलामी परेड का निरीक्षण करते हुए महाप्रबंधक, श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह।



स्वतंत्रता दिवस संदेश - 2020 का वाचन करते हुए महाप्रबंधक महोदय।



स्वतंत्रता दिवस - 2020 के अवसर पर गुब्बारे छोड़ते हुए महाप्रबंधक महोदय तथा अध्यक्षा पमरे म.क.स., श्रीमती अर्चना सिंह।



जागृति केन्द्र में ध्वजारोहण करते हुए महाप्रबंधक महोदय।



जागृति केन्द्र के बच्चों के साथ महाप्रबंधक महोदय, अपर महाप्रबंधक तथा अध्यक्षा पमरे म.क.स. एवं पदाधिकारीगण।

पश्चिम मध्य रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारीगण



पश्चिम मध्य रेलवे पर राजभाषा प्रयोग- प्रसार में उल्लेखनीय योगदान एवं राजभाषा विभाग को कुशल मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए हम अपने सभी मुख्य राजभाषा अधिकारियों का आभार व्यक्त करते हैं।



उत्सव स्वतंत्रता का

